RNI No. CHHHIN/2017/74986 Postal Regd. No. C.G./RYPDN/95/2018-20

छत्तीसगढ़ कृषि वानिकी

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष-6, अंक-07, मई-2023 मूल्य- 50 रूपये

सहकार से समृद्धि
आत्मनिर्भर भारत, आत्मनिर्भर कृषि
IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
इफको नैनो यूरिया और
इफको नैनो डी ए पी
का वादा
लागत कम और लाभ ज्यादा
FCO अधिसूचित दुनिया का पहला नैनो उर्वरक
500 मिली बोतल मात्र ₹ 225/- में
500 मिली बोतल मात्र ₹ 600/- में
इफको नैनो यूरिया (तरल)
इफको नैनो डीएपी (तरल)
IFFCO
NANO UREA
IFFCO
NANO DAP
LIQUID
IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
STATE OFFICE : H.No.-2, Sector-2, Gitanjanli Nagar, Post-Shankar Nagar, Raipur - 492007,
Phone -0771- 2444656, 658, E-mail : smm_chhattisgarh@iffco.in
राज्य कार्यालय : म.नं.2, सेक्टर-2, गीतांजली नगर, पो.आ.-शंकरनगर, रायपुर-492007, दूरभाष 0771-2444656, 2444658

ASHA ENTERPRISES

KRISHNA CARE

IND 24 हाऊस नं.-44, सेक्टर-3, गीतांजली नगर,
रायपुर (छत्तीसगढ़) 492001

डॉ. मनोज कुमार अग्रवाल

98260 24888, 70009 65959

फेस नं. - 108, लिंगराज कोल्ड स्टोरेज के पास, दुर्गा पेट्रोल पंप के पीछे
रिंग रोड़ नं.-2, गोंदवारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

hiya_manoj@yahoo.com

RNI No. CHHHIN/2017/74986

छत्तीसगढ़ कृषि वानिकी

हिन्दी मासिक पत्रिका

कृषि,उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, पर्यावरण,सहकारिता, महिला बाल विकास एवं ग्रामीण विकास पर आधारित मासिक वैज्ञानिक कृषि पत्रिका

वर्ष-6, अंक-7, मई-2023, मूल्य- 50 रूपये

संपादक :
श्रीमती सत्यवती साहू
मोबाइल :
7354871089, 9826323280

सारंगढ़ जिला-रायगढ़ प्रतिनिधि:
ननकीदाऊ साहू
मोबाइल : 9981045003

बेमेतरा जिला प्रतिनिधि:
सुनील सिंह राजपूत
मोबाइल: 9893039658

गरियाबंद जिला प्रतिनिधि:
सतीश सिन्हा
मोबाइल:7587137895

राजिम-बेलटूकरी प्रतिनिधि:
चंद्रशेखर साहू
मोबाइल : 7389398900

धमधा जिला-दुर्ग प्रतिनिधि:
रामगोपाल साहू
मोबाइल: 9993556570

जिला-धमतरी प्रतिनिधि:
रूपेन्द्र कुमार साहू
मोबाइल: 9977762958

पथरिया जिला-मुंगेली प्रतिनिधि:
भुवनेश्वर साहू
मोबाइल: 6264071700

कबीरधाम प्रतिनिधि
संजय कुमार
मोबाइल: 9981712928

जिला-धमतरी प्रतिनिधि
धनेन्द्र साहू
मोबाइल: 7974773345

जिला-बिलासपुर प्रतिनिधि
जदुनंदन प्रसाद वर्मा
मोबाइल : 9752016664

तकनीकी सलाहकार
संपादक मंडल:

डॉ. जी.एस. तोमर
प्रोफेसर सस्य विज्ञान
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर

डॉ. भागचन्द्र जैन
प्राध्यापक, कृषि अर्थशास्त्र
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर

डॉ. सुनील अग्रवाल
वरिष्ठ वैज्ञानिक, सस्य विज्ञान विभाग
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर

तोरण लाल साहू
असिस्टेंट प्रोफेसर
इं.गां.कृ.वि.वि. रायपुर

एस.के. साहू
वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी

ननकीदाऊ साहू
प्रगतिशील कृषक, ग्राम रेड़ा, सारंगढ़

डॉ. चवलेश कुमार
फल एवं बागवानी प्रौद्योगिकी विभाग
आईसीएआर-आईएआरआई, नई दिल्ली

डॉ. हेमंत माहुरे
बागवानी वैज्ञानिक, नई दिल्ली

डॉ. प्रदीप कुमार मिश्रा
विषय वस्तु विशेषज्ञ/सह प्राध्यापक
कृषि वानिकी, कृषि विज्ञान केन्द्र,
मनकापुर, गोंडा

मनोज कुमार अग्रवाल
रायपुर, छत्तीसगढ़

आप अपनी मौलिक लेख एवं सुझाव हमें इस पते पर मेल कर सकते है :-
पता: हाऊस नं. 189, बजरंग चौक, नहरपारा, कापा (मोवा), रायपुर (छ.ग.) 492004

अनुक्रमणिका

- समाचार-5
- पुष्ठ निर्जलीकरण-14
- अंजीर की खेती-15
- गाय तथा बछड़े का प्रबंधन-18
- संतुलित आहार में सब्जियों के पोषक मूल्य - 21
- मछली-सह-सूकर पालन -25
- अंत: परजीवियों से होने वाले रोग - 29
- छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री वृक्षारोपण प्रोत्साहन योजना-31

चंदली में रीपा देख खुश हुए मुख्यमंत्री

महिलाओं की उद्यमशीलता को सराहा

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से संपादक सहमत हो, यह आवश्यक नहीं है।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र रायपुर रहेगा।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक श्रीमती सत्यवती साहू द्वारा फेयर एसोसियेट, पण्डरी तराई, रायपुर, छत्तीसगढ़, 492004 से मुद्रित एवं हाऊस नं. 189, बजरंग चौक, नहरपारा, कापा (मोवा), रायपुर, छत्तीसगढ़, 492004 से प्रकाशित।

बोरे-बासी तिहार में मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने श्रमिकों के साथ लिया बोरे-बासी का स्वाद

अथान, चटनी, भाजी, बड़ी-बिजौरी और गोंदली के साथ बोरे-बासी तिहार में हुआ सामूहिक भोज।

प्रतीक एग्रीटेक

ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता

अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल श्रमेव जयते के नारे के साथ श्रम तिहार पर देश के किसानों और श्रमवीरों को संबोधित किया

रायपुर, 01 मई 2023 : मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल श्रमेव जयते के नारे के साथ श्रम तिहार पर प्रदेश के किसानों और श्रमवीरों को संबोधित किया और कहा कि:

- उहमारी सरकार ने खनन, कृषि, निर्माण एवं अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले मजदूरों का हमेशा सम्मान किया है।
- पिछले 4 सालों में हमारी सरकार ने मजदूरों के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं।
- हमारी सरकार मजदूरों के खाते में सीधे पैसे डाल रही है, चाहे नोनी सशक्तिकरण योजना हो या अन्य योजनाएं।
- लॉकडाउन के समय में भी छत्तीसगढ़ के मजदूरों को काम मिला है छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में कभी मंदी नहीं आई।
- मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से आम जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा रही है।
- छत्तीसगढ़ में 18 लाख 40 हजार से ज्यादा निर्माण श्रमिकों का पंजीयन किया गया है।
- नोनी से सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत 26 हजार से ज्यादा बेटियों को लाभान्वित किया गया है।
- 56 करोड़ रुपए से अधिक की राशि डीबीटी के माध्यम से श्रमिकों को आज प्रदान किया जा रहा है।
- हमारी सरकार 65 प्रकार के लघु वनोपजों खरीदी हो रही है। तेंदूपत्ता संग्राहकों को लाभान्वित करने के लिए राशि बढ़ाकर चार हजार रुपए प्रति मानक बोरा किया गया है।
- आज इस दिवस को बोरे बासी तिहार के रूप में मनाया जा रहा है हमारी सरकार ने गरीब के भोजन को भी सम्मान देने का कार्य किया है।
- छत्तीसगढ़ के परंपरागत गीत, नृत्य संगीत को संरक्षित करने का कार्य भी हमारी सरकारक रर हीह ै,प रंपरागतप र्वत ीज त्यौहारों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।
- उन्होंने कहा कि आज हमारे श्रमिकों का त्योहार है, आज हमारा प्रदेश जिस बड़िया स्थिति में है उसकी वजह हमारे श्रमिकों का श्रम है।
- पिछले 4 साल से हमारी सरकार श्रमिकों और किसानों के लिए काम कर रही है। यह सहायता सीधे खाते में राशि जा रही है। इससे वे अपने पसंद की वस्तु खरीद सकते हैं।
- लॉकडाउन से जब दुनिया जूझ रही थी तब हमारे मजदूर काम कर रहे थे। हमारे प्रदेश ने उन कठिन दिनों में भी मंदी नहीं देखी, इसके पीछे आपका श्रम है।
- नीले रंग की मोबाइल मेडिकल गाड़ी आती है और नि:शुल्क इलाज हो जाता है। श्रमिकों की मृत्यु या दुर्घटना हो जाने पर राशि दी जा रही है। महिला श्रमिकों के लिए ई रिक्शा का अनुदान दिया जा रहा है।
- तेंदूपत्ता श्रमिकों के लिए मानदेय बढ़ा दिया गया है। तीज त्योहार हमारे श्रमिक भाई खूब मन से मनाते हैं। इसे प्रोत्साहन देने का काम हमारी सरकार द्वारा हो रहा है।
- आज का दिन हम बोरे बासी त्योहार के रूप में मनाया जा रहा है। पिछले साल सबने बोरे बासी खाई। श्रमिकों के भोजन का सम्मान किया। अपने खानपान के सम्मान का गौरव हमें है।
- करमा और ददरिया जैसे गीत श्रमिक गाते हैं। हम इन्हें केंद्र में लाये हैं।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइल: 9827999717, 7389840407

मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल द्वारा प्रदेश स्तरीय श्रमिक सम्मेलन में की गई महत्वपूर्ण घोषणाएं

रायपुर, 01 मई 2023 : मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल द्वारा साइंस कॉलेज मैदान में आयोजित प्रदेश स्तरीय श्रमिक सम्मेलन में की गई महत्वपूर्ण घोषणाएँ:

1. मुख्यमंत्री निर्माण मजदूर मंथली सीजन टिकट कार्ड योजना के अंतर्गत ऐसे पंजीकृत निर्माण श्रमिक जो निर्माण कार्य के लिये अपने घर से अन्य स्थानों पर रेल/ बस के माध्यम से प्रतिदिन आना जाना (यात्रा) करते है। उन्हें मंडल द्वारा रेल मंडल एवं परिवहन विभाग तथा नगर निगम द्वारा निर्धारित दर अनुसार 50 कि.मी. तक यात्रा हेतु मासिक टिकट कार्ड प्रदाय किया जायेगा, जिसके माध्यम से ऐसे श्रमिकों को यात्रा पर होने वाला संपूर्ण व्यय छ0ग0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण मंडल करेगा।

2. मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक मृत्यु एवं दिव्यांग सहायता योजना के अंतर्गत पंजीकृत निर्माण श्रमिकों की कार्यस्थल में दुर्घटना मृत्यु पर देय सहायता राशि रूपये 1.00 लाख से बढ़ाकर रूपये 5.00 लाख तथा स्थायी दिव्यांगता पर देव सहायता राशि रूपये 50 हजार से बढ़ाकर रूपये 2.50 लाख किया जा रहा है। साथ ही अपंजीकृत श्रमिक कार्यस्थल पर दुर्घटना से मृत्यु होने पर रूपये 1.00 लाख सहायता प्रदान की जावेगी।

3. मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक आवास सहायता योजना - मंडल द्वारा इस योजना के अंतर्गत अधिक से अधिक निर्माण श्रमिकों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से योजना के पूर्व प्रावधान को अधिक्रमित करते हुए नवीन आवास क्रय / नवीन आवास निर्माण के लिये एकमुश्त राशि रूपये 50,000/- अनुदान प्रदाय किया जावेगा।

4. दुर्घटना में चिकित्सा सहायता योजना इस योजना का नाम परिवर्तित होकर **मुख्यमंत्री निर्माण श्रमिक दीर्घायु सहायता योजना** के नाम से जाना जाएगा, साथ ही अब इस योजना अंतर्गत हृदय की शल्य क्रिया, गुर्दा का प्रत्यारोपण, लीवर का प्रत्यारोपण, मस्तिक की शल्य क्रिया, रीढ़ की हड्डी की शल्य क्रिया, पैर के घुटने की शल्य क्रिया, कैंसर ईलाज, लकवा ग्रसित जैसे गंभीर बीमारी से पीड़ित पंजीकृत निर्माण श्रमिकों को शासन के अन्य योजनाओं के अतिरिक्त रूपये 20,000/- तक अनुदान प्रदाय किया जाएगा।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

गरीब परिवरों की बेटियों के लिए सहारा बनी नोनी सुरक्षा योजना

रायपुर, 04 मई 2023 : गरीब परिवार में जन्म लेने वाली बेटियों के लिए नोनी सुरक्षा योजना बड़ा सहारा बन रही है। इससे परिवार की बेटियों के भविष्य को लेकर चिंता दूर हुई है। योजना के तहत गरीब परिवार की बेटियों को 18 वर्ष पूरा होने और 12वीं उत्तीर्ण होने पर एक लाख रूपए प्रदान किए जाते हैं। इसके लिए जीवन बीमा निगम एवं महिला एवं बाल विकास विभाग के मध्य अनुबंध किया गया है। नोनी सुरक्षा योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा गरीब परिवारों की पंजीकृत बालिका के नाम पर भारतीय जीवन बीमा निगम में 05 वर्ष तक प्रति वर्ष 5 हजार रूपये अर्थात कुल 25 हजार रूपये जमा किए जाते हैं। अब तक भारतीय जीवन बीमा निगम में कुल 122.64 करोड़ की राशि कॉरपस फंड में विनियोजित की गई है। नोनी सुरक्षा योजना अंतर्गत अब तक 84 हजार 594 बालिकाओं का पंजीकरण किया गया है।

जनगणना वर्ष 2001 के आंकड़ों के अनुसार छत्तीसगढ़ में बाल लिंगानुपात प्रति हजार 975 था जो कि जनगणना वर्ष 2011 में घटकर एक हजार के अनुपात में 969 हो गया। इस प्रकार राज्य में घटते बाल लिंगानुपात तथा बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक सोच बढ़ाने के लिए 01 अप्रैल 2014 से ''नोनी सुरक्षा योजना'' लागू की गई। योजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में बालिकाओं की शैक्षणिक तथा स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार लाना, बालिकाओं के अच्छे भविष्य की आधारशिला रखना, बालिका भ्रुण हत्या रोकना और बालिकाओं के जन्म के प्रति समाज में सकारात्मक सोच लाना और बाल विवाह की रोकथाम करना है।

छत्तीसगढ़ राज्य के मूल निवासी तथा गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की 01 अप्रैल 2014 के बाद जन्मी अधिकतम दो बालिकाओं को योजना के तहत लाभ मिलता है। योजना का लाभ लेने के लिए जिला स्तर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी और विकासखण्ड स्तर पर बाल विकास परियोजना अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।

नई तस्वीर : मातृत्व को सम्मान देती 'कौशल्या मातृत्व योजना'

दंतेवाड़ा, 10 मई 2023 : नि:संदेह मातृत्व महिलाओं के लिए कठिन दायित्व में से एक है एक नई जिंदगी को लाने के पश्चात उसके पालने और संभालने में हर दिन चुनौतियों का सामना प्रत्येक मां करती है। इस क्रम में छग सरकार की महत्वाकांक्षी एवं जनहितैषी योजनाओं में से एक कौशल्या मातृत्व योजना ऐसे ही माताओं को समर्पित हैं। छत्तीसगढ़ सरकार की मंशानुरूप इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में दूसरी बार बेटी को जन्म देने वाली महिलाओं को प्रोत्साहन राशि प्रदान करके आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है। इसके अन्तर्गत दूसरी बार बेटी को जन्म देने वाली महिलाओं को 5000 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। ताकि महिलाएं अपने नवजात बालिका शिशु का अच्छे भरण-पोषण देखभाल कर स्वयं आत्मनिर्भर बनें।

उल्लेखनीय है कि इस योजना की शुरुआत छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के द्वारा 1 मार्च 2021 को किया गया था। इस योजना के तहत दूसरी बार बेटी को जन्म देने वाली माताओं को 5000 की प्रोत्साहन राशि छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा दी जा रही है। इस योजना के माध्यम से राज्य में बेटियों को जन्म देने वाली महिलाओं की जीविका में सुधार आने के साथ-साथ ही वित्तीय रूप से कमजोर वर्ग के परिवार के लिए यह योजना बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुई है। जिले में भी ग्राम फुलपाड़ की पटेलपारा निवासी लक्ष्मी पति भामन एवं जूनापारा की श्रीमती भीमे पति भीमा भी इस योजना से लाभान्वित हितग्राहियों मे से एक हैं जिन्हें आंगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा लाभ दिलवाया गया।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

उद्यानिकी फसलों के लिए ज्यादा से ज्यादा ऋण उपलब्ध कराएँ: मुख्य सचिव श्री जैन

सहकारिता, वाणिज्यिक कर, योजना,आर्थिक एवं सांख्यिकी विभागों की समीक्षा

रायपुर, 04 मई 2023 : मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन ने आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित समीक्षा बैठक में उद्यानिकी फसलों को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को सहकारी बैंकों के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा ऋण वितरण करने के निर्देश दिए हैं। इसी प्रकार उन्होंने अधिकारियों को सहकारी समितियों में गोदाम निर्माण करने कहा।

मुख्य सचिव ने कहा कि वाणिज्यिक कर (जीएसटी) विभाग के अधिकारियों को जीएसटी/वेट में वृद्धि के लिए लक्ष्य निर्धारित करें। उन्होंने कहा कि व्यवसायी द्वारा प्रस्तुत डाटा का विश्लेषण समय पर किया जाए और राजस्व में वृद्धि सुनिश्चित करें। बैठक में सहकारी बैंकों में एटीएम सेवाओं का विस्तार, प्राथमिक सहकारी समितियों में कम्प्यूटरीकरण एवं गोदाम निर्माण, बस्तर एवं सरगुजा में सहकारी बैंकिंग सुविधाओं, वनाधिकार पट्टाधारी कृषकों को ऋण वितरण सहित उद्यानिकी फसलों की खेती हेतु शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर अल्पकालीन ऋण वितरण सहित आकांक्षी जिला एवं आकांक्षी विकासखण्ड कार्यक्रम की अद्यतन स्थिति की समीक्षा की गई। इस अवसर पर सचिव सहकारिता एवं वाणिज्यिक कर, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी श्री हिमशिखर गुप्ता, आयुक्त वाणिज्यिक कर श्री भीम सिंह, एमडी मार्कफेड श्री मनोज सोनी सहित सहकारिता, वाणिज्यिक कर एवं योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के अन्य अधिकारी मौजूद थे।

मुख्य सचिव ने मक्का प्रसंस्करण एवं एथेनॉल प्लांट की प्रगति की जानकारी लेते हुए अधिकारियों को प्लांट निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं। अधिकारियों ने बताया कि कोण्डागांव जिले के ग्राम कोकोड़ी में 18 एकड़ भूमि प्लांट हेतु चयन की गई है, प्लांट निर्माण का कार्य जारी है। शीघ्र ही आगामी महीनों में प्लांट में उत्पादन कार्य प्रारंभ होने की संभावना है। इसी तरह से कवर्धा जिले के भोरमदेव में देश के प्रथम एथेनॉल प्लांट हेतु अनुबंधकर्ता एन.के.जे. बॉयो फ्यूल प्राइवेट लिमिटेड भिलाई को 35 एकड़ भूमि प्रदान की गई और इस पर एथेनॉल प्लांट निर्माणक ाक ार्यप ूर्णक र ि लयाग याहै। प्लांट का ट्रॉयल रन 21 मई 2023 में और वाणिज्यिक उत्पादन 20 जून 2023 से प्रारंभ हो जाएगा।

एग्रो लाइफ साइंस का जबलपुर में विक्रेता सम्मेलन संपन्न

एग्रो लाइऊ साइंस कार्पोरेशन द्वारा जबलपुर (कान्हा)म ें वक्रेतास म्मेलनक ाअ ायोजन किया गया। उक्त अवसार पर कंपनी के तरफ से श्री डी. दत्ता मार्केटिंग मैनेजर स्टेट हेड श्री कपिल कुमार एग्मा एनर्जी, श्री पुष्पेन्द्र चांसोरिया, श्री गौरी शंकर सनौडिया इत्यादि कंपनी स्टॉफ उपस्थित थे। कंपनी द्वारा चार नए उत्पाद की लॉचिंग की गई। टॉस्क लाइफ प्लस, ए.आर.एम. रजोल पावर, पेनक्लोर नए उत्पाद की लांचिंग किया गया। इस अवसर पर लगभग 200 से अधिक विक्रेता बंधुओं ने भाग लिया।

प्रतीक एग्रीटेक

ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता

अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

किसान ड्रोन के साथ कीटनाशकों के प्रयोग के लिए फसल विशिष्ट एसओपी जारी

- मिलेट्स उत्पादन, प्रसंस्करण, मूल्यवर्धन के लिए मशीनरी नामक बुक का विमोचन
- चुनौतियों से निपटने के लिए खेती में तकनीक का समर्थन जरूरी- श्री तोमर

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने आज किसानों और अन्य हितधारकों के मार्गदर्शन के लिए सार्वजनिक डोमेन में फसल विशिष्ट ड्रोन के साथ कीटनाशकों के अनुप्रयोग के लिए मानक प्रचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) जारी की। श्री तोमर ने मिलेट उत्पादन, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन के लिए मशीनरी नामक एक पुस्तिका का भी विमोचन किया। इस अवसर पर श्री तोमर ने कहा कि कृषि हमारी प्रधानता है, इसलिए चाहे रिसर्च का काम हो या योजनाएं सृजन का, सरकार की पहली प्राथमिकता कृषि को बढ़ावा देने व किसानों की माली हालत में सुधार की रहती है। आज कृषि क्षेत्र में अनेक चुनौतियां है। किसानों को खेती में रोकना, नई पीढ़ी को भी आकर्षित करना व उत्पादन लागत कम करते किसानों का मुनाफा बढ़ाना है। इनके लिए कृषि क्षेत्र में तकनीक का समर्थन बहुत जरूरी है, सरकार इस दिशा में सतत प्रयासरत है।

केंद्रीयम ंत्रीश्र ीत ोमरन ेक हा क कृषि क्षेत्र में नित-नई चुनौतियों की संभावनाएं रहती है, इसलिए समय-समय पर सोच में बदलाव के साथ ही विधाओं का परिवर्तन जरूरी है। कृषि क्षेत्र की बात करें तो आने वाले कल में तकनीक का समर्थन किए बिना हम उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाएंगे, इसलिए योजनाओं को तकनीक से जोडने् का प्रयास किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी हमेशा तकनीक के समर्थन पर बल देते हैं और उन पर स्वयं काम भी करते हैं। बड़ी योजनाओं की बात करें तो आज प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत करीब ढाई लाख करोड़ रु. किसानों के खातों में पहुंच चुके हैं, जिसमें कोई प्रश्नचिन्ह नहीं है। सूक्ष्म सिंचाई परियोजना के भी अच्छे परिणाम आ रहे हैं। प्राकृतिक खेती जैसे विषयों को आगे बढ़ाया जा रहा है। हमारे देश ने नैनो यूरिया बनाया और जल्द ही नैनो डीएपी का लाभ किसान उठा सकेंगे। ड्रोन टेक्नालॉजी को सरकार ने कृषि क्षेत्र में स्वीकार किया है। पिछली बार जब टिड्डी का प्रकोप हुआथ ात ोउ सस मयड ्रोनक े उ पयोगक ी जरूरत महसूस की गई थी, तभी से प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में केंद्र सरकार के पूरे समर्थन के साथ ड्रोन तकनीक हमारे सामने है। कृषि में लागत कम करने व कीटनाशकों के दुष्प्रभाव से शरीर को बचाने में किसान ड्रोन द्वारा व्यापक लाभ मिलेगा।

ड्रोन के लिए अनुदान सहायता- किसानों के खेतों में ड्रोन के प्रदर्शन हेतु आईसीएआर के संस्थान, केवीके, एसएयू, राज्य-केंद्र सरकार के अन्य कृषि संस्थानों व कृषि गतिविधियों में कार्यरत भारत सरकार के पीएसयू को कृषि यंत्रीकरण उप-मिशन के तहत आकस्मिक व्यय के साथ ड्रोन लागत की 100त्न दर पर वित्तीयस हायता(प्रतिड ्रोन1 0ल ाखरु पये तक) प्रदान की जाती है। एफपीओ को किसानों के खेतों पर प्रदर्शन के लिए ड्रोन की खरीद के लिए 75त्न की दर से अनुदान सहायता दी जाती है। ड्रोन प्रयोग के जरिये कृषि सेवाएं प्रदान करने के उद्देश?य से किसान सहकारी समिति, एफपीओ व ग्रामीण उद्यमियों के तहत सीएचसी द्वारा ड्रोन खरीद हेतु ड्रोन की मूल लागत की 40त्न की दर से वित्तीय सहायता दी जाती है, जो अधिकतम 4 लाख रु. है। सीएचसी स्थापित करने वाले कृषि स्नातक ड्रोन की लागत के 50त्न की दर से अधिकतम 5 लाख रु. तक की वित्तीय सहायता हेतु पात्र हैं। व्यक्तिगतछ ोटेव स ीमांत कसानों,ए ससी-एसटी के किसानों, महिला किसानों, पूर्वोत्तर राज्यों के किसानों को भी ड्रोन की लागत की 50त्न दर से अधिकतम 5 लाख रु. व अन्य किसानों को ड्रोन की लागत की 40त्न दर से अधिकतम 4 लाख रु. तक की सहायता प्रदान की जाती है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-खरीफ अभियान 2023

- भविष्य की चुनौतियों से निपटने खेती में तकनीक का समर्थन जरूरी-श्री तोमर
- केंद्रीय कृषि मंत्री के मुख्य आतिथ्य में हुआ राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन-खरीफ अभियान 2023
- कृषि क्षेत्र की गतिविधियों को सैटेलाइट केम ाध्यमस ेम ॉनीटरक रनेक े िलए कृषि मैपर एप लांच

केंद्रीयक ृषिए वं कसानक ल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा है कि भविष्य की जरूरतों व चुनौतियों को देखते हुए जरूरी है कि कृषि क्षेत्र में तकनीक को समर्थन मिले। जैसे-जैसेट ेक्नालॉजीब ढ़ेगी,ख ेतीम ेंक ाम करना आसान होगा, मेहनत कम होगी व ज्यादा मुनाफे की स्थिति बन सकेगी। इससे आने वाली पीढियों का भी खेती के प्रति रूझान बढ़ेगा, इसके लिए भारत सरकार ने कई योजनाएं बनाई हैं व इनका सुचारू क्रियान्वयन किया जा रहा है। श्री तोमर ने यह बात खरीफ अभियान-2023 के लिए पूसा, नई दिल्ली में आज आयोजित राष्ट्रीय कृषि सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि कही।

केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने कहा कि कृषि राज्यों का विषय है, वहीं केंद्र सरकार फंड का इंतजाम कर सकती है, योजनाएं बना सकती है और बनी योजनाओं को लेकर उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर सकती है, लेकिन परिणाम तभी आएगा, जब राज्यों की गति बढ़ेगी, राज्य अनेक प्रकार के नवाचार करने के साथ ही कृषि के समक्ष विद्यमान चुनौतियों का समय-समय पर समाधान करेंगे। केंद्र और राज्य सरकारों के साथ मिलकर काम करने की वजह से हम खाद्यान्न, दलहन-तिलहन के उत्पादन, उद्यानिकी, निर्यात सहित तमाम सेक्टरों में आज अच्छी अवस्था में खड़े हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि खेती मुनाफे की गारंटी दें, अगर ऐसा नहीं होगा तो आने वाली पीढियां खेती के क्षेत्र में काम करने नहीं आएंगी और देश के सामने यह बड़ी चुनौती होगी, इसलिए जरूरी है कि खेती में ज्यादा से ज्यादा तकनीक का समर्थन भी बढ़े, केंद्र सरकार इस दिशा में लगातार प्रयासरत है। अनेक योजनाओं के माध्यम से नई तकनीकें किसानों तक पहुंचाई जा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकारों को ऐसी स्कीम बनाना चाहिए, जिनसे क्रमबद्ध तरीके से पूरे राज्य में तकनीक पहुंच सकें। इसके साथ ही अनुसंधान की भी जरूरत है। वर्ष 2050 तक की चुनौती हम सबके सामने है, जब हमारी आबादी बढ़ेगी। दूसरा आज भारत जिस राजनीतिक परिदृश्य पर खड़ा है, उसमें हमारी जिम्मेदारी अपने देश की जनता के प्रति तो है ही, लेकिन दुनिया के बहुत से देश जो हमसे अपेक्षा करते हैं, उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी भी हमें पूरी करना है। इसलिए चाहे फोर्टिफाइड फसलों का सवाल हो, उत्पादकता बढ़ाने का या जलवायु परिवर्तन के दौर में उच्च ताप को सहन करने की शक्ति वाले बीजों की प्रचुरता का मामला हो, इन सब विषयों पर हमें एक साथ काम करने की आवश्यकता है। भारत सरकार इस दिशा में चिंतित भी है और गंभीर भी।

केंद्रीय कृषि मंत्री ने कहा कि पहले उर्वरक की उपलब्धता को लेकर विसंगतियों के कारण कई तरह की कठिनाइयां होती थी। मैं इस बात का साक्षी हूं कि जब यूरिया की जरूरत होती थी, तो अनेक राज्यों के सांसदों के साथ हम लोग पार्लियामेंट में गांधीजी की प्रतिमा के सामने बैठे रहते थे, इसके बावजूद यूरिया की उपलब्धता नहीं होती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ संकल्प के परिणामस्वरूप केंद्र सरकार ने इस दिशा में राज्य सरकारों के साथ मिलकर कई ठोस कदम उठाएं, यही कारण है कि पिछले सात-आठ वर्ष में इस तरह की विपरीत परिस्थितियां नहीं बनीं व व्यवस्थाएं ठीक प्रकार से चलती रही हैं। आज लगभग ढाई लाख करोड़ रुपये की सब्सिडी फर्टिलाइजर में जा रही है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

कृभको का रायपुर में उर्वरक संवर्धन कार्यक्रम

कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड (कृभको) रायपुर के तत्वाधान में उर्वरक संवर्धन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 22.04.2023 को समय प्रातः 11:30 बजे सभाकक्ष, कृषि महाविद्यालय, बेमेतरा में सम्पन्न किया गया है ।

जिसके मुख्य अतिथि श्री आशीष छाबड़ा, माननीय विधायक, बेमेतरा, अध्यक्षता माननीयड ॉ.ए म.पी.ठ ाकुर,अ धिष्ठाता,र ेवेंद्र सिंह वर्मा, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, विशिष्ट अतिथि श्री आर.एस. तोमर, वरिष्ठ राज्य प्रबंधक, कृभको रायपुर, (छ.ग.) डॉ. अशीत पाण्डेय, प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, डॉ. तोषण ठाकुर, सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, डॉ. टिंडे साहू, सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, डॉ. उमेशक ुमारध रुव,स हायकप ्राध्यापक,क ृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, डॉ. हेमलता निराला, सहायक प्राध्यापक, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, डॉ.आशीष श्रीवास्तव, डॉ. प्रवीण शर्मा, डॉ. देवचरण गोसाई, श्री रमेंन दास, क्षेत्रीय प्रतिनिधि, कृभको रायपुर, कृषि महाविद्यालय, बेमेतराक े छ ात्र-छात्राओं,क ृषि वज्ञानक ेंद्र, बेमेतरा के अधिकारी कर्मचारी सहित लगभग 180 लोगो कि उपस्थिति रही ।

मुख्य अथिति श्री आशीष छाबड़ा, माननीय विधायक, बेमेतरा, ने अपने संबोधन में छत्तीसगढ शासन द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमोंक े ब ारेम ेंब तायाग याह ैं। त था इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित नए धान के बीज इंदिरा बीज का किसानों को वितरण भी किया गया । डॉ. एम.पी. ठाकुर, अधिष्ठाता, रेवेंद्र सिंह वर्मा, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, बेमेतरा, द्वारा अपने उद्बोधन में कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को कम लागत में अधिक उत्पादन कैसे लिया जायें इसके बारें में जानकारी दिया गया । श्री आर.एस. तोमर, वरिष्ठ राज्य प्रबंधक, कृभको रायपुर, (छ.ग.) ने अपने संबोधन में यह बताया कि कृभको रास्ट्रीय स्तर कि सहकारी संस्था है जिसका मुख्य उद्देश्य रासायनिक उर्वरको का उत्पादन एवं सहकारिता के माध्यम से देश के किसानों कि समृधि के लिए प्रतिबद्ध है । कृभको द्वारा डी.ए.पी .एवं अन्य फास्फेटिक उर्वरको का आयात कर देश के किसानों को सही समय पर सही दरों पर उच्चा गुणवत्ता वाले उर्वरक प्रदाय कर देश कि समृद्धि के लिए प्रयासरत है ।

संकल्प शिक्षण संस्थान का राहुल यादव प्रदेश टॉपर बना

जशपुरनगर 10 मई 2023 : जिला कलेक्टर डॉ. रवि मित्तल और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जितेंद्र यादव के मार्गदर्शन में जशपुर जिले में शैक्षणिक गुणवत्ता का प्रतीक संकल्प शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों ने कमाल कर दिया और पूरे प्रदेश में कक्षा 10 वीं में टॉपर दे कर इतिहास को दोहराया है। वर्ष 2018 में भी इसी संस्थान का विद्यार्थी यज्ञेश चौहान ने भी पूरे प्रदेश में टॉप किया था। इस संस्थान के 11 बच्चे 10वीं और 12वीं में टॉप टेन में जगह बनाया है।

आओ इस वसुंधरा को सजाएँ

आओ इस वसुंधरा को सजाएँ
हरे-भरे पौधे को मिलकर लगाएँ।
यह पौधे वसुंधरा का श्रृंगार है
इसी से ही प्रकृति में निखार है।
जहाँ पौधों की होती हरियाली है
वहीं जीवों में आती खुशहाली है।
यह पेड़-पौधे जीवन के आधार हैं
इनके बिना जग सुना निराधार है।
जब यह पौधे खुशी में लहराते हैं
तब ये मन-मयूरा भी झूम जाते है।
इन पेड़ों से शुद्ध हवाएँ मिलती है
और शीतल छाया प्रदान करती हैं।
पेड़-पौधे हमारे मित्र अभिन्न अंग हैं
फल-फुल औषधि देते भरते रंग है।
चलो हम संरक्षण करें फर्ज निभाएँ
और अपना भविष्य सुखद बनाएँ।

अशोक पटेल 'आशु'
तुस्मा,शिवरीनारायन(छ ग)
मोबाइल : 9827874578

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

Empowering Plants is Empowering Us, इस संकल्पना पर विश्वास कर मनुष्य के स्वास्थ्य का तारतम्य मिट्टी और पौधों के साथ देखना एक ऑर्गेनाइजेशन की दूरदृष्टि है : साइटोलाइफ एग्रीटेक प्रा लि, मुंबई !

साइटोंलाइफ ने अपना प्रथम बिजनेस असोशीएट मीटिंग दिनाँक 22 अप्रैल,2 023अ क्षयत ृतीयाक ेर ायपुरक े होटल सायाजी में संपादित किया ! इस कार्यक्रम में छग के सभी प्रमुख कृषि आदान वितरक व अन्य कृषि जगत के गणमान्य ब्यक्तित्व उपस्थित थे !

साइटोलाइफ के सीईओ डॉ अमित त्रिपाठी ने कंपनी की विस्तृत कार्ययोजना को प्रेजेंट किया और कंपनी के विभिन्न बिजनेस आयामों को भी बताया जिसमें अग्री-डाइगनोस्टिक के साथ अग्री-इनपुटस की अनुसंसा तथा अन्य ग्लोबल कृषि तकनिकियाँ भी भारत में आ रही हैं जो किसानों के लिए बहुत लाभदायी होंगी !

श्री डी के चोपड़ा, प्रमुख मार्गदर्शक साइटोलाइफ (कृषि जगत की जाने माने ब्यक्तित्व) ने अपने बक्तव्य में कंपनी के विजन व मिशन को मानवता और पर्यावरण के बीच एक संतुलन के साथ कार्य करने वाली योजना बताया !

डॉ जी पी पांडे (से. अपर संचालक कृषि) ने कृषि वितरकों की महत्वपूर्ण भूमिका, जहां ब्यापार और किसान हित एक साथ ही साधन होता हैं पर ब्याख्यान दिया ! श्री आर यस तिवारी (प्रांत प्रबंधक इफको) ने कृषि में समन्वितप ेषणप ्रबंधनप रअ पनेअ नुभवव विचार ब्यक्त किए ! डॉ शिवलिंगम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ICAR – NIBSM भी कार्यक्रम में अपनी उपस्थित दिए !

साइटोलाइफ के इस कार्यक्रम में माननीय कृषि मंत्री, कुलपति व संचालक ICAR – NIBSM तथा संचालक DKMA (पूर्व कृषि आयुक्त भारत सरकार) ने अपने बधाई संदेश पत्र प्रेषित किए !

सभी वितरक बंधुओं ने साइटोलाइफ की कार्यशैली व परिणामोन्मुख वैज्ञानिक उत्पादों को भी खूब सराहा !

पानी हे जिनगानी

फोकट झन बोहावव जी पानी।
इही तो सबके हावय जिनगानी।।
चिरई चिरगुण अऊ सबो परानी।
नइ बाँचे कोनो हा जी बिन पानी।।

रुख राई के घलो जड़ हा सुखाथे।
पानी बिना सबो के जीव मर जाथे।।
खुला झन छोँड़व जी नल के चोंटी।
पानी बर तरस जहु एक-एक खोँची।।

झन अँटावव तरीया अऊ डबरी।
नइ मिलही पानी हा एको गगरी।।
राखव जतन के कुँआ के पानी ला।
इही बँचाही सबो के जिनगानी ला।।

चन्नी कस छेदा होगे धरती दाई।
कइसे होही जी अब हमर भलाई।।
बूंद-बूंद बर तरस खाबो सब परानी।
नइ बाँचही जब एको बूंद जी पानी।।

रचनाकार :
गोकुल राम साहू
धुरसा-राजिम(घटारानी)
जिला-गरियाबंद(छत्तीसगढ़)
मो.9009047156

पृष्ठ १४ का शेष भाग.....

लैंड स्केप की रूप-रेखा तैयार करने में उपयोगी है। पादप वर्गीकरण में पौधों, फूलों एवं पत्तियों का पहचान करने हेतु फाइल तैयार करने में उपयोग किया जाता है।

फूल, पत्तियों तथा अन्य भागों का निर्जलीकरण करके तथा इनसे तैयार सजावटी सामग्री का बाजार में विक्रय कर रोजगार के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है जिससे पुष्प खेती को बढ़ावा देकर कृषकों

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

पुष्प निर्जलीकरण

नीलिमा पाण्डे
एम.एस.सी. (उद्यानिकी), पुष्प विज्ञान एवं भुदृश्य

प्राचीन काल में फूल एवं पौधों के विभिन्न भागों को सुखाकर संग्रहित कर उपयोग किया जा रहा है। फूलों एवं पौधों के अन्य भागों को कवक, जीवाणु, विषाणु एवं कीडों आदि से सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक रूप से सूर्य केप्रकाशमें सुखाकरर खाजाताथि कन्तु आधुनिक काल में जब फूल एवं पत्तियों की सुन्दरता एवं गुणों को संरक्षित करने के लिए पुष्प निर्जलीकरण की कला को वैज्ञानिक सोच प्रदान किया गया है एवं इस क्रिया को व्यापारिक दृष्टिकोण से लाभ प्राप्त कर आय में वृद्धि किया जा सकता है।

निर्जलीकरण की प्रक्रिया:- इस प्रक्रिया में पुष्पों को कृत्रिम रूप से तैयार गर्मी द्वारा ताप को नियंत्रण कर आर्द्रता एवं वायु प्रवाह के माध्यम से सुखाना, जिसे निम्न विधियों से सुखाया जाता है।

- **इम्बेडिंग की विधि:-** इस विधि में बालू या सिलिका जैल का उपयोग निर्जलीकरण पदार्थ के रूप में किया जाता है। इस विधि में डस्टबिन, प्लास्टिक, मिट्टी के पात्र का उपयोग किया जाता है। पात्र का आकार इम्बेडिंग में प्रयुक्त फूल एवं अन्य भागों के आकार के अनुरूप लेते हैं।
- सिर्फपुष्प की इम्बेडिंग हेतु कम गहरे वाले डेस्ट ट्रे।
- तनायुक्त पुष्प की इम्बेडिंग हेतु गहरे पात्र।
- पुष्पों युक्त शाखा की इम्बेडिंग हेतु अधिक गहरे वाले पात्र।

(एक पात्र में केवल एक ही तरह के पुष्पों की इम्बेडिंग करनी चाहिए)

इम्बेडिंग द्वारा निर्जलीकरण:- इस विधि में फूल का आकार एवं गुणों के परिवर्तन को रोकने के लिए (24 से 45 घंटे) किसी पात्र में बालू एवं सिलिका जैल में ढककर उचित ताप में ओवन में सुखाते हैं।

हर्बेरियम विधि:- फूल, पत्तियों को सोखता कागज शीट या अखबार पेपर की बीच में तीन से चार तहों को दो कोरूगेटेड बोर्ड के बीच में रखते हैं। अधिक कोरूगेटेड शीट के तहों को एक दुसरे के उपर मोटी परत बना लेते हैं। इन परत को दो लकड़ी के फ्रेम के बीच में रखकर पट्टे को कसकर इस प्रकार बांध लेते हैं कि फूल एवं पत्तियों को नुकसान न पहुँचे। इन बंडल को खड़ा रखकर प्रतिदिन धूप में जलवाष्प के मुक्त होने तक रखा जाता है। आर्द्र एवं नम वातावरण की अपेक्षा गर्मी एवं शुष्क जलवायु में निर्जलीकरण होने में कम समय लगता है। इसके ओवन के माध्यम से परतों को बदले बिना कम लागत में निर्जलीकरण कर गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद प्राप्त किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के पुष्पों को ओवन में उचित तापक्रम में निर्जलीकरण किया जा सकता है, जैसे कि लेवेन्डर तथा क्राइसेन्थिमम को हर्बेरियम या इम्बेडिंग में 45 सेंटीग्रेट पर 48 घण्टे, गेंदा को इम्बेडिंग से 48 सेंटीग्रेट पर 72 घण्टे, नरगिस को इम्बेडिंग से 48 सेंटीग्रेट पर 70 घण्टे, निम्फिया को इम्बेडिंग से 48 सेंटीग्रेट पर 120 घण्टे, इसके अलावा लैन्टाना, बार्बीना, युफोर्बिया, एडिएन्टम, माइक्रोसिरियम, फर्न, कैसिया बाइफ्लोरा, बोगोनविलिया,गुलदाउरी,इक्जोरा,पत्तियाँ, फूल, घांस को दबाकर 40 सेंटीग्रेट पर 24 से 45 घण्टे तक सुखाया जाता है।

पुष्प निर्जलीकरण की महत्वपूर्ण बिन्दु एवं सावधानियाँ:-

1. सिंचाई के दो दिन के पश्चात कम नमी में पुष्प एवं पत्तियों का संग्रहण करना चाहिए।
2. पुष्प एवं पत्तियों का संग्रह शुष्क मौसम में धूप में करना चाहिए।
3. हमेशा ताजा फूल एवं पत्ती को ही निर्जलीकरण के लिए संग्रह करें।
4. फूल एवं पत्तियों को मुरझाने से आकार परिवर्तन होने से बचाने के लिए तोड़ने के तुरंत बाद इम्बेड करना चाहिए।
5. निर्जलीकरण के लिए एक समय में एक प्रकार के फूल का चयन करें।
6. इम्बेडिंग प्रोसेस का दिनांक एवं समय अवश्य अंकित करें।
7. दबाने के लिए सोखता कागज का प्रयोग कर इस प्रकार फूल, पत्तियों को रखें जिसमें बराबर दबाव पड़े।
8. मुलायम ब्रश की सहायता से अवांछित धूल एवं कणों को साफकरना चाहिए।

निर्जलीकरण उत्पादों का उपयोग:-

फूल एवं पत्तियों का ग्रीटिंग कार्ड, वाल पेपर के रूप में उपयोग किया जाता है तथा

शेष पृष्ठ १३ पर .....

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

अंजीर की खेती

संगीता, प्रभाकर सिंह एवं हेमन्त पाणिग्राही
फल विज्ञान विभाग,
इंदिरा गांधी कृषि विश्वाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

परिचय : अंजीर की खेती व्यापारिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण खेती है, क्योंकि इसके फलों की बाजार में अच्छी कीमत मिलने की वजह से किसान भाइयों को अच्छी कमाई हो जाती है। अंजीर का फल स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्धक और बहुपयोगी होता है। इसके फलों को ताजा और सुखाकर दोनो प्रकार से खाया जाता है। इसके अलावा अंजीर के फलों का उपयोग औषधि बनाने में भी की किया जाता है। अंजीर के पूर्ण रूप से पके हुए फल में चीनी की मात्रा काफी ज्यादा पाई जाती है। अंजीर के फलो में कैल्सियम, विटामिन ए., बी., सी. और फाइबर जैसे कई तरह के पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इसके उपयोग से मधुमेह, स्तन कैंसर, सर्दी-जुकाम, दमा और अपचन जैसी बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है। इसका फल पीला, सुनहरी और बैंगनी रंग का होता है।

मिट्टी : अंजीर का पौधा भूमध्यसागरीय जलवायु का पौधा है। इसके पौधे को विकास के लिए गर्मी की आवष्यकता होती है। अंजीर का पौधा झाडीनुमा पौधे की तरह दिखाई देता है। अंजीर की खेती के लिए उचित जल निकास वाली उपजाऊ भूमि की जरूरत होती है, लेकिन अधिक उत्पादन लेने के लिए इसकी खेती हल्की दोमट मिट्टी में करना सबसे उपयुक्त होता है। जल भराव वाली जगहों पर इसकी खेती नही करनी चाहिए। इसकी खेती के लिए मिट्टी का पी. एच. मान 6 से 7 के बीच होना चाहिए।

जलवायु : अंजीर की खेती के लिए शुष्क और कम आर्द्र मौसम सबसे उपयुक्त होता है। इसके पौधे को सामान्य बारिष की आवष्यकता होती है। सर्दी का मौसम इसके पौधों के लिए अनुकुल नही होता है। सर्दियों में पड़ने वाला पाला इसकी खेती के लिए नुकसानदायक होता है।इ सकेप ौधेग र्मीके म ौसमम ेंअ च्छेस े विकास करते हैं और इसके फल भी गर्मियों के मौसम में ही पककर तैयार होते है। अंजीर के पौधें को शरूआत में सामान्य तापमान की जरूरत होती है। पूर्ण रूप से विकसित होने के बाद इसके पौधे 25 से 35 डिग्री तापमान पर अच्छे से विकास करता है। सर्दियों में 20 डिग्री से नीचे तापमान होने पर इसका पौधा विकास करना बंद कर देता है।

उन्नत किस्में : अंजीर की कई तरह की उन्नत कस्में हैं जिन्हें अधिक उत्पादन लेने के लिए विभिन्न क्षेत्रो में उगाया जाता हैं। भारत में इसकी खेती कई राज्यों की जा रही है।

पंजाब अंजीर : अंजीर की इस किस्म के पौधे लगभग दो साल बाद पैदावार देना शुरू कर देते हैं। इसके पौधों की लंबाई सामान्य होती है। इसके 4 से 5 साल पूराने पौधे से लगभग 15 किलो के आसपास फल प्राप्त होते है, जिनकी मात्रा पौधों के विकसित होने के साथ-साथ बढ़ते जाते है। इसके फल बड़े आकर वाले और स्वादिष्ट होते हैं। इसके फल पीले रंग के होते हैं। जिन पर गुलाबी-जामुनी रंग की आभा बनी होती है।

पूना अंजीर : इस किस्म के पौधे सामान्य ऊँचाई के होते है। इसके पौधे 39 डिग्री के आसपास तापमाप पर अच्छे से विकास करते हैं। इसके फल सामान्य आकार और पीले रंग के होते है। इसके पूर्ण विकसित एक पौधे से 25 से 30 किलो तक फल प्राप्त किये जा सकते है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

मार्सलीज अंजीर : अंजीर की ये एक उन्नत किस्म है, जिसके पौधे अधिक तापमान को भी सहनक रल ेतेह ै।इ सकेफ लोंक े प कनेक े दौरान तापमान अधिक होना अच्छा होता है। इस किस्म के फलों को अधिक समय तक भंडारित किया जा सकता है। इसके एक पौधे से 20 किलो के आसपास फल प्राप्त होते है।

पुनेरी अंजीर : अंजीर की इस किस्म के पौधे न्यूनतम 4 से अधिकतम 44 डिग्री तापमान वाली जगहों पर आसानी से उगाये जा सकते हैं। इस किस्म के पौधे सामान्य आकार के होते हैं। इसके पूर्ण विकसित पौधे से 20 से 25 किलो तक फल प्राप्त किये जा सकते है। इसके पौधे अधिक आद्रता को सहन नही कर सकत है। अधिक आर्दत्र का प्रभाव इसके पौधो के साथ साथ फलों पर भी देखने को मिलता है।

देनकर अंजीर : इस किस्म के पौधें बीज रोपाई के लगभग तीन से चार साल बाद फल देना शुरू कर देते है। इसके एक पौधें से लगभग 20 किलो के आस-पास फल प्राप्त होते है। इसके फल समान्य आकार के होते है। इसका रंग सूखने के बाद हल्का पीला दिखाई देता है।

इसके अलावा और भी कई किस्में है जिन्हें सम्पूर्ण भारत में अधिक पैदावार के लिए उगायाज ाताह ै,ि जनमेंइ ंडियनर ॅाक,ब्राउन टर्की, कृष्णा, एलीफेन्ट ईयर, ओसबॉर्न, वीपिंग फिग और सफेद फिग जैसे कई किस्में शामिल है।

खेत की तैयारी : अंजीर के पौधे एक बार लगाने के बाद लगभग 50 से 60 साल तक पैदावारद ेतेह ै।इ सकीख ेतीक रनेक े लिए शुरूवात में खेत में मौजूद पुरानी फसलों के अवषेषों को नष्ट कर दें। उसके बाद खेत की दो से तीन तिरछी जुताई करने के बाद रोटावेटर चलाकर मिट्टी को भुरभरा बना लें। उसके बाद खेत में पाटा लगाकर मिट्टी को समतल बना लें, ताकि खेत में जल भराव जैसी समस्या से

छुटकारा मिल सकें। खेत को समतल बनाने के बाद उसमें 5 मीटर की दूरी बनाते हुए पंक्तियों में गड्ढों को तैयार करने के दौरान प्रत्येक पंक्तियों के बीच चार से पांच मीटर की दूरी होनी चाहिए। गड्ढों को तैयार करते वक्त उनका आकार दो फिट चौड़ा और एक से डेढ फिट गहरा होना चाहिए। गड्ढो के तैयार होने के बाद उनमें उचित मात्रा में जैविक और रासायनिक उर्वरक को मिट्टी में मिलकर भर दें। फिर अंजीर के पौधे का रोपण करें और अच्छे से सिंचाई कर दें।

पौध तैयार करना : अंजीर की खेती के लिए पहले इसकी पौध तैयार की जाती है। इसकी पौध,क लमअ ैरब ीजद ोनोंक े म ाध्यमस े तैयार कर सकते हैं। लेकिन नर्सरी में इनकी पौध तैयार करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, क्योंकि इसके पौधों की उचित देखभाल नहीं करने पर वो नष्ट हो जाते हैं। इसलिए इसकी पौध सरकार द्वारा रजिस्टई किसी भी नर्सरी से खरीदकर लगा सकते हैं। नर्सरियां में कई किस्मों के पौधे आसानी से मिल जाते हैं। नर्सरी से पौध खरीदते वक्त सिर्फ अच्छे से विकास कर रहे लगभग एक साल पुराने पौधे को ही खरीदें।

पौध रोपाई : अंजीर के पौधे की रोपाई खेत में तैयार किये गए गड्ढों में की जाती है। अंजीर के पौधों की रोपाई करने से पहले गड्ढों में उगने वाली खरपतवार को निकाल दें और उनमें उचित मात्रा में जैविक और रासायनिक उर्वरक को मिट्टी में मिलकर गड्ढों में भर दें। गड्ढे के बीचोबीच एक और छोटा गड्ढा तैयार कर उसमें पौधे की रोपाई की जाती है। पौधो को छोटे गड्ढें में लगाने से पहले उन्हें गोमूत्र से उपचारित कर लें और पौधे को गड्ढों में लगाने के बाद उसे चारों तरफसे एक से डेढ सेटीमीटर तक मिट्टी डालकर दबा दें।

अंजीर के पौधें को साल में दो बार लगाया जा सकता है। जहाँ सिंचाई की उचित व्यवस्था हो वहाँ इसके पौधो को फरवरी या मार्च माह में उगाा सकते हैं। लेकिन जहाँ सिंचाई की व्यवस्था न हो वहाँ इसे बारिष के मौसम में जुलाई या अगस्त माह के शुरूवात में उगा सकते है।

सिंचाई: अंजीर के पौधो को सिंचाई की सामान्य जरूरत होती है। सर्दियों के मौसम में इसके पौधों की 15 से 20 दिन के अंतराल में सिंचाई कर देनी चाहिए। गर्मियों में इसके पौधों को पानी की ज्यादा जरूरत होती हैं। गर्मियों के मौसम में इसके पौधों की सप्ताह में दो बार सिंचाई कर देनी चाहिए। जबकि बारिष के मौसम में इसके पौधों को सिंचाई की आवष्यकता नही होती है। लेकिन बारिष समय पर न हो और पौधें को पानी की जरूरत हो तो पौंधों को पानी देना चाहिए। इसके पूर्ण विकसित पौधे को साल भर में 10 से 12 सिंचाई की ही आवश्यकता होती है।

उर्वरक : अंजीर के पौधों में उर्वरक की आवष्यकता सामान्य रूप से होती है। इसके लिए शरूआत में गड्ढों को तैयार करते समय 15 किलो के आसपास पुरानी गोबर की खाद को जैविकख ादक े रू पम ें मट्टीम ें मलाल ें। उसके बाद रासायनिक खाद के रूप में नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाष प्रत्येक की 50-50 ग्राम मात्राक ो मट्टीम ें मलाकरग ड्ढोंम ें भ रद ें। इसके पौधों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरक का इस्तेमाल करते समय कम नाइट्रोजन की मात्रा का इस्तेमाल करें, क्योंकि अधिक नाइट्रोजन इसके लिए उपयोगी नही होती। पौधों को दी जाने वाली उर्वरक की मात्रा को पौधों के बढ़ते

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

उम्र के साथ बढ़ा देनी चाहए।

खरपतवार नियंत्रण : अंजीर की खेती में खरपतवार नियंत्रण नीराई-गुड़ाई के माध्यम से ही किया जाता है। लेकिन शुरूआत में इसके पौधों की गहरी गुड़ाई इससे जड़ो को नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए शुरूआत में खरपतवार को हाथों से निकाल कर खरपतवार नियंत्रण करें। अंजीर के पौधों की साल में पांच से सात गुड़ाई काफी होती है।

पौधों की देखभाल : अंजीरक े प ौधोंक ी देखभाल करना काफी जरूरी होता है। इसके पौधों की अच्छी देखभाल कर जल्द ही अधिक उत्पादन हासिल किया जा सकता हैं। इसके पौधोंक ोख ेतम ें ल गानेक े ए कस ालब ाद उनकी छँटाई कर दें। पौधों की पहली छँटाई के दौरान इसके पौधे को एक मीटर की ऊंचाई पर काट दें, ताकि पौधे में बगल से और नई शाखाओं का जन्म हो और पौधा झाडीनुमा बने जाए। जैसे ही अंजीर के पौधों फल लगना शुरू हो जाये उसके बाद हर साल गर्मियों के मौसम में इसके पौधों की छँटाई करनी चाहिए।

अंर्तवर्ती फसलें : अंजीर के पौधें खेत में लगने के लगभग तीन साल बाद पैदावार देना शुरू करते हैं। इस दौरान खेत में अंजीर के पौधों के बीच खाली पड़ी जमीन में सब्जी, कम समय में तैयार होने वाली बागबानी फसलें जैसे - पपीता, मसालें वाली फसलें और औषधीय फसलों को उगाकर अच्छी कमाई कर सकते है।

कीट व रोग नियंत्रण : अंजीर के पौधों में किसी तरह का कोई खास रोग देखने को नही मिला है, लेकिन कुछ कीटों की सुंडी होती है, जो इसके पश्रियों को खाकर पौधे के विकास को प्रभावित करती हैं। इनके नियंत्रण के लिए पौधों पर नीम के तेल या नीम काढ़े का छिड़काव करना चाहिए। इससे पौधों पर फल बनने के दौरान कीटों का आक्रमण भी नही होता है।

फलों की तुड़ाई : अंजीर के फलों की तुड़ाई फलों के पूर्ण रूप से पकने के बाद ही करनी चाहिए,क योंकिइ सकेक च्चेफ लत ोड़नेक े बाद फल अच्छे से पकते नही है, जिससे फलों की गुणवश्रा में कमी हो जाती है। इसकी विभिन्न किस्मों के फलों का बाहरी रंग अलग-अलग पाया जाता है, जिस कारण हर किस्म के फलों का रंग देखकर इसके फलों के पकने के बारें में पता लगाया जा सकता है। सामान्य रूप में इसके पके हुए फल मुलायम होते है और डंठल के पास से अंदर की तरफसे मूड जाते हैं। इसके फलों की तुड़ाई मई माह से अगस्त माह तक की जाती है। इसके फलों की तुड़ाई के दौरान फलों को पानी से भरे बर्तन में डालकर रखना चाहिए। इसके फलों की तुड़ाई के दौरान पेड़ों से निकलने वाले रस के हाथों पर लगने की वजह से शरीर में चर्म रोग हो सकता है। अत: फलों की तुड़ाई सावधानीपूर्वक हाथों पर ग्लब्स पहन कर करना चाहिए।

ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग नीति 2023-24 के संबंध में दिशा निर्देश जारी

कोरबा, 09 मई 2023 : छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे-छोटे कुटीर उद्योगों के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार प्रदान कर उनकी आमदनी को बढ़ाने के उद्देश्य से ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग नीति 2023-24 लागू की गई है। जिसके अंतर्गत जिले में पारंपरिक रूप से कृषि, पशुधन, वनोपज आधारित एवं महिला व युवा स्व सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण एवं कुटीर उद्योगों को विकसित करने का कार्य किया जाएगा। ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग नीति 2023-24 में कोदो, कुटकी, रागी, मक्का, टमाटर, सब्जियां, चाय, कॉफी, काजू, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, शहद उत्पादन, कोसा, रेशम उत्पादन, हर्बल्स औषधियां, लाख, साबुन, बड़ी, पापड़, आचार, अगरबत्ती, बुनकर, सूती एवं कोसा वस्त्रों का उत्पादन, माटी कला, आधुनिक कुटीर उद्योग (एल.ई.डी. बल्ब, सेनेटाईजर, डिटर्जेंट आदि) शामिल है । इसी प्रकार सेवा क्षेत्र अंतर्गत छोटे उद्यमी (नाई, धोबी, राज मिस्त्री, बिजली मिस्त्री आदि), गैर पारंपरिक उत्पाद (गोबर पेंट, गोमूत्र इन्सेक्टिसाईड, गोबर गैस से बिजली उत्पादन आदि) जैसे अन्य कार्य शामिल है।

इस योजना अंतर्गत जिले के विकास खण्डों में ग्रामीण औद्योगिक पार्को (रीपा) तथा शहरी औद्योगिक पार्कों (यूआईपीए) में ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग हेतु मूलभूत सुविधाओं से युक्त प्लॉट, वर्कशेड आदि भौतिक अधोसंरचनाएं उपलब्ध कराई जाएंगी तथा औद्योगिक नीति 2019-24 अंतर्गत मिलने वाली अनुदान व छूट संबंधी सुविधाएं उद्योग विभाग अंतर्गत सिंगल विण्डो प्रणाली माध्यम से नियमानुसार प्रदाय किया जाएगा। साथ ही अनुसूचित जाति, जनजाति एवं महिला उद्यमियों को विशेष आर्थिक पैकेज दिया जाएगा। जिले में ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग अंतर्गत उच्च प्राथमिकता वाले विकासखण्ड चिन्हाकित किए गए है जिसमें हैंडलूमउ द्योगक े ि लएक रतलाव क टघोरा विकासखण्ड चयनित है। इसी प्रकार रेशम उद्योग के लिए कटघोरा, करतला, पोड़ी उपरोड़ा, पाली विकासखण्ड चयनित है। योजना के संबंध में विस्तृत जानकारी कार्यालय, महाप्रबंधक, जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र कोरबा में संपर्क कर प्राप्त किया जा सकता है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

गाय तथा बछड़े का प्रबंधन

विनीता यादव, राहुल सिंगरौल, ईशा दुबे, मुकेश भारतेंदु, वैष्णवी नामदेव, डॉ दीपक कुमार कश्यप, डॉ ओम प्रकाश एवं डॉ मयंक सिंह
वेटरनरी पॉलिटेक्निक, सूरजपुर
दाऊ श्री वासुदेव चंद्राकर कामधेनू विश्वविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग

गाय को कामधेनु भी कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में गाय को बेहद उच्च स्थान है। गाय से हमें कई महत्वपूर्ण चीजे प्राप्त होती है। जैसे कि- दूध, गोबर (खाद के रूप) आदि। पशुपालन एक बड़े पैमाने का व्यवसाय है। पशु पालन को कृषि के सहायक व्यवसाय के रूप में पेश किया गया है। प्राचीन समय में पशुओं की सहायता के बिना खेती संभव नहीं थी। खेती के अधिकांश कामों में जानवरों का सहारा लिया जाता था। लेकिन आज पशुपालन की ओर किसानों का रुझान कम होता जा रहा है जिसकी वजह से उनकी आय मे भी कमी आ गई है। हमारी देश की सरकार सहित विभिन्न राज्यों की सरकारें खेती के साथ ही पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरह की स्कीम लेकर आई है। गाय के प्रसव के बाद जन्मा नवजात बच्चा जिसका उम्र 1 वर्ष तक का हो उसे बछड़ा कहते हैं। ऐसा कहा जाता है, स्वस्थ बछड़ा डेयरी फॉर्म की नींव होती है उसके अच्छे स्वास्थ्य के लिए बछड़े को अच्छा प्रबंधन व आहार देना आवश्यक है। बछड़े देश के डेयरी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि डेयरी झुंड भविष्य पूरी तरह से युवा बछड़ों का सफल कि पालन पोषण पर निर्भर करता है। मादा बछड़ों को विशेष रूप से झुंड के प्रतिस्थापन के लिए रखा जाता है। बछड़ों की देखभाल केवल डेयरी उद्योग के निर्वाह के लिए आवश्यक है, बल्कि हमारे अच्छी गुणवता वाले नस्ल संरक्षित करने और बनाए रखने के लिए भी आवश्यक है।

दुधारू पशुओं का रखरखाव : डेयरी व्यवसाय की सफलता मुख्यता दुधारू पशुओं पर निर्भर करती है इसलिए दुधारू पशुओं का रखरखाव उनका निवास स्थान, खानपान एवं स्वास्थ्य प्रबंधन समुचित होना चाहिए ताकि पशुपालकअ पनेद ुधारूप शुस ेउ सकीप ूरी क्षमता से दूध उत्पादन एवं प्रजनन ले सके और डेयरी व्यवसाय से अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। दुधारू गाय बहुत तरीके से महत्वपूर्ण होती है। इसका दूध बच्चो के लिए बेहद पौष्टिक माना गया है और बुद्धि के विकास मे कारगर होता है। गाय के दूध का महत्व उसमें मौजूद तत्व बढ़ाते है। अधिकतम दूध उत्पादन के लिए उचित भोजन और देखभाल प्रबंधन आवश्यक है।

- ब्याने के तुरंत बाद और कुछ दिनो के लिए सुपाच्य आधार गुनगुना दलिया खिलाया जाना चाहिए।
- दुधारू गायो की स्वच्छ पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- दुधारू पशु को पहले जरूर स्नान कराएं इससे पशु में स्वच्छता तो रहेगी साथ ही साथ उसके शरीर में परजीवीयो का प्रकोप भी कम रहेगा।
- दुधारू पशु को आहार के बाद आराम करने के लिए अलग स्थान होना चाहिए जहां पर पशु आराम कर सके।
- प्रत्येकद ुधारूप शुक ोस मय-समयप र संक्रामक रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण कराना चाहिए जिससे रोग पशुओं में न फैले तथा पशु पूरी क्षमता से दूध दे।
- दुधारू पशुओं में समय-समय पर वाहय एवं अंतप्परजीवियो की रोकथाम एवं इलाज के लिए प्रयोगशाला में गोबर का परीक्षण कराते रहना चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार और चिकित्सक की सलाह से औषधि देनी चाहिए अन्यथा पशु को दी गई खुराक का कोई लाभ नहीं होगा।
- दूध देने से पहले एवं बाद में थानों को 1त्न पोटेशियम परमैग्नेट से धोए ताकि थानों में जीवाणुओं का प्रवेश रुक सके एवं स्वच्छ दूध का उत्पादन हो सके।
- सुखी एवं हरे चारों को मिलाकर देना चाहिए विशेषकर बरसीम की पहली या दूसरी कटाई जब हो तो उसे पशु को खिलाना चाहिए।पशु के लिए बहुत ही लाभदायक होता है क्योंकि बरसीम में प्रोटीन एवं पानी की मात्रा ज्यादा होती है।
- प्रत्येक दुधारू पशु के हरे चारे में कम से कम 20 प्रतिशत सूखा चारा होना अति आवश्यक है।
- खनिज लवण एवं नमक दुधारू पशुओं में देना अत्यावश्यक है क्योंकि दूध में काफी मात्रा में इनका स्वाद होता है।
- पशु को कम से कम 5 से 10 किलोग्राम हरा चारा दे। पशु को रोजाना देने से पशु को विटामिन ए की कमी नहीं होगी।
- पशु का निवास स्थान स्वच्छ एवं आरामदायक होना चाहिए।
- पशुशाला की फर्श पर पैरा व भूसे को बिछा देना चाहिए।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

- पशु को रखने का स्थान मौसम के हिसाब से बदलते रहना चाहिए।गर्मी में पशुओं को छाया में तथा बरसात में हवादार स्थान पर रखना चाहिए।

गाभिन पशुओं का रखरखाव

- गर्भधारण के पश्चात गाय एवं भैंसों की देखभाल बहुत ही सावधानी पूर्वक करनी चाहिए। बच्चे के जन्म से पूर्व तथा बाद में मां की देखभाल में जरा सी भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए अन्यथा दूध की मात्रा व बच्चे के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- ब्याने के 2 माह पूर्व दूध निकालना बंद करना चाहिए।
- गाभिन पशुओं को गर्भपात हुई पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- पशुओं को डराना, दौड़ाना अथवा अन्य पशुओं से लड़ने देना नहीं चाहिए।
- लंबी दूरी की यात्रा से बचे।
- पशु को कृमि नाशक दवा एवं टीकाकरण पशु चिकित्सक के परामर्श के उपरांत ही करना चाहिए।
- पशु को सुखाने के बाद थनों के क्षेत्रों पर जीवाणु रोधक घोल लगाना चाहिए।
- पशु को अत्यधिक धूप ,गर्मी या जाड़े से बचाना चाहिए।
- उचित पोषण देना चाहिए। पशुओं को इस अवस्था में आकद्वर व वजन के अनुसार एक से डेढ़ किलोग्राम दाना प्रतिदिन देना चाहिए।
- हरा चारा दिन में 40 से 50 किलोग्राम एवं हरेच ारेम ेंब रसीमज् वारअ ौरम क्केक ा प्रयोग कर सकते हैं।
- पशु के राशन में मक्का, जौ, गेहूं या अन्य अनाजों के दानों के साथ गेहूं का चोकर ,तिलहन फसल की खलि, नमक खनिज मिश्रण एवं दलहनी फसल की भूसी /छिलका होना चाहिए।
- पीने की साफ, स्वच्छ एवं पर्याप्त पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- गाभिन पशुओं को आठवें महीने के बाद अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- मादा पशु के आवास का आकार 12 मीटर स्क्वायर खुला होना चाहिए।
- पशु के आवास की छत की ऊंचाई 220 सेंटीमीटर से कम नहीं होनी चाहिए।
- बाड़ा ऐसा होना चाहिए जो वातावरण की खराब परिस्थितियों जैसे अत्याधिक सर्दी एवं गर्मी और बरसात से मादा पशु को बचा सके और साथ में हवादार भी हो।
- पशु साला की साफ सफाई के साथ-साथ उसमें ताजी हवा एवं प्रकाश का समुचित प्रबंध होना चाहिए।
- पशु साला की फर्श पर पैरा व भूसे को बिछा देना चाहिए।

प्रसव के बाद पशुओं के रखरखाव

- पशु को अपने बच्चे को चाटने व दूध पिलाने देना चाहिए
- पशु को जल्दी पचने वाला चारा दे।
- पशु को पीने के लिए गर्मी में शुद्ध ताजे हल्के गर्म पीने लायक पानी देना चाहिए ।
- गाय को साफ करना- बछड़े को गाय के थन के पास- लाने से पहले थन व पिछले भाग को पानी या क्लोरिनयुक्त विलयन या पोटैशियम पर मैग्नेट लोशन के एंटीसेप्टिक घोल वाले गुनगुने पानी से साफ करना चाहिए तथा स्वच्छ गुनगुने जल से साफ करके साफ कपड़े से पोंछना चाहिए।
- गाय तथा बछड़े के आस -पास के क्षेत्र को साफ व सूखा कर देना चाहिए तथा आसपास कीटाणु नाशक दवाइयों का छिड़काव करना चाहिए तथा गाय से निकले अपशिष्ट को गड्ढे में डालकर ऊपर से मिट्टी से ढक देना चाहिए, जिससे संक्रमण न हो।
- बच्चे के जन्म के पश्चात यदि 8 से 10 घंटे बाद भी पशु की जेर ना गिरे तो इसे खींचने का प्रयास कदापि नहीं करना चाहिए तथा तुरंत ही नजदीकी पशु चिकित्सालय में संपर्क करना चाहिए।
- अधिकद ूधद ेनेव ालेप शुओंम ें मल्क फीवरन ामकब ीमारीह ोनेक ीस ंभावना रहती है जिसमें पशु की गर्दन अकड़ जाती हैव हप शुज मीनप रल ेटज ाताह ैइ स बीमारी की किसी भी प्रकार से संभावना या लक्षण प्रकट होने की स्थिति में बिना कोई देरी किए किसी योग्य पशु चिकित्सक से इलाज कराना चाहिए।
- बच्चे जन्म के पश्चात यदि 10 से 15 दिन बाद भी मादा जनन अंगों से किसी प्रकार का स्त्राव ,दुर्गंध अथवा मवाद आदि आता है तो किसी योग्य पशु चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

बछड़े का रखरखाव

बछड़े की देखभाल शुरुआती दौर में अच्छी तरह से होना काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि आज की बचत कल की होने वाली गाय या भैंस है।

- जन्म के तुरंत बाद उन नाक और मुंह से किसी भी म्यूकोसा या कफ को हटा दें। आमतौर पर गाय प्रसव के तुरंत बाद बछड़े को चाट कर साफ करती है। यह बछड़े को सांस लेने और परिसंचरण को उत्तेजित करने में मदद करता है। कभी - कभी गायें घबराई हुई और अनुभवहीन हो या लंबे समय तक प्रसव के बाद गाय थक सकती है। ऐसी परिस्थितियों में नवजात बछड़े के नाक और मुँह से सभी म्यूकस को हटा दिया जाता है जिससे बछड़ा अच्छे से साँस ले सके। यदि बछड़ा साँस लेना शुरू नहीं करता है तो बछड़े को एक तरफ लिटाकर हाथों से छाती की दीवार को संकुचित और शिथिल करते हुए कृत्रिम श्वसन का

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

उपयोग किया किया जाना चाहिए ।

- श्वसन मार्ग में म्यूकस के साथ अवरुद्ध हो सकता है । ऐसी स्थिति में बछड़े को इस तरह से उठाना चाहिए कि उसका सिर नीचे रहे, जिससे म्यूकस / कफ निकल सके। बछड़े को उठाते समय यह सावधानी बरतनी चाहिए जिससे कि बछड़ा न फिसले । तौलिये का उपयोग बछड़े को उठाते समय पकड़ बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- जब गायें न चांटें तो बछड़े को कपड़े या बोरी से रगड़ कर सुखा लें।
- गाय के पास बछड़ा को ले जाया जाता है जिससे गाय अपने बछड़े को चाट सके ताकि बछड़ा साफ हो सके व साथ ही माँ में बछड़े के प्रति मातृत्व, भावना का विकास हो सके। इससे बछड़े के शरीर का रक्त परिसंचरण भी ठीक हो जाता है और बछड़े को खड़े होने और चलने के लिए तैयार करता है। मातृत्व भावना के कारण गाय बछड़े को अपना लेती है। यदि बछड़े को दूध पीने में कठिनाई होती है तब ऐसी स्थिति में बछड़े के मुँह को हाथों से पकड़कर थनों के पास ले जाया जाता है ।
- करीब एक से आधे घंटे के अंदर बछड़ा खड़ाह ोकरग ायक ेध नक ेप ासप हुँच जाता है या बछड़े को गाय के पास ले जाया जाता है। बच्चे को मां का पहला दूध अर्थात चीज का पान करने देना चाहिए। बछड़ा 1 घंटे में खड़े होकर दूध पीने की कोशिश करता है यदि ऐसा ना हो तो दूध पान में मदद करें।
- **गर्भनाल(नेवल कॉर्ड) को काटना** - प्रसव के बाद गर्भनाल या नेवल कॉर्ड न गिरने की स्थिति में नेवल कॉर्ड को 2-5 सेमी छोड़कर धागे या रबड़ से बाँध देना चाहिए, जिससे गर्भनाल सूखकर नीचे गिर जाये। न गिरने की स्थिति में बाँधी हुई जगह से 1 सेमी से नीचे कीटाणु रहित कैंचीय ाब लेडस ेक ाटद ेनाच ाहिएप ूरे नेवल कॉर्ड को आयोडिन टिंचर वाले कप में डालकर कीटाणुरहित कर देना चाहिए या काटे हुए स्थान पर आयोडिन या बोरिक एसिड लगा देना चाहिए ।
- बछड़ा धीरे-धीरे अगले पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करता है तथा कई बार जमीन पर गिरता है। करीब एक से आधे घंटे के अंदर बछड़ा खड़ा हो जाता है। बछड़े को खड़े होने में दिक्कत होने से सावधानी-पूर्वक खड़ा करने की कोशिश करना चाहिए। बछड़ा को 1 घंटे के अंतराल में खड़ा कर देना चाहिए, जिससे बछड़े के पैरों में बाद में दिक्कत न रहे।
- **खीस (कोलोस्ट्रम) का महत्व**- कोलोस्ट्रम गाय के ब्याने के बाद पहला दुध होता है । यह गाढ़ा और पीले रंग का होता है। इसमें सामान्य दूध से 4-5 गुना ज्यादा प्रोटीन और 10-15 गुना ज्यादा विटामिन ए होता है। कोलोस्ट्रम (खीस) बछड़े के जन्म के आधे घंटे के भीतर ही पिला देना चाहिए। बछड़े को कोलोस्ट्रम दिन में 2-3 बार ही पिलाना चाहिए तथा इसकी मात्रा लगभग दो से ढाई लीटर प्रतिदिन होनी चाहिए। यह जन्म के पश्चात् प्रथम 3 दिनों तक पिलाया जाना चाहिए। प्रथम 3 सप्ताह तक 1. बँटा 10 हिस्सा, 3-4 सप्ताह के बीच में 1 बँटा 15 हिस्सा तथा 4 सप्ताह के बाद 1 बँटा 20 हिस्सा पिलाया जाना चाहिए ।
- कई लोग खीस को गंदा दूध मानकर फेंक देते है तथा बछड़े को नहीं पिलाते है, जबकि खीस पिलाना जरूरी होता है क्योंकि यह खीस बछड़े को रोगों से लड़ने में तब तक रक्षा करती है जब तक की वह स्वयं की प्रतिरक्षा विकसित नहीं कर लेता है।
- यदि प्रसव के तुरंत बाद बछड़े की माँ की मृत्यु गई हो तब उस स्थिति में ऐसी गाय का उपयोग करना चाहिए जो कुछ दिनों में बछड़ा बियाई हो जिसे उपमाता कहते है। इस स्थिति में उपमाता के दूध को बछड़े के मुँह में तथा बछड़े के शरीर लगा दिया जाता है तथा अनाथ बछडे को उपमाता के पास ले जाया जाता है 7 जब गाय को उस बछड़े के शरीर से अपनी दूध का गंध आता है तब गाय उस बछड़े को अपना बच्चा समझ कर चाटना शुरू कर देती है, जिससे उस बछड़े के प्रति उपमाता में मातृत्व भावना का विकास होता है। यह विधि बछड़े को उपमाता द्वारा अपनाने में सहायता मिलती है ।
- **बछड़े में असमान्यताओं का निरीक्षण तथा उपचार** - जन्म के पश्चात बछड़े में शारीरिक व जन्मजात असमान्यताओं का निरीक्षण करते है इसके लिए बछड़े के शरीर में प्राकृतिक छिद्रों में किसी प्रकार की सूजन व उभार के लिए म्यूकस मेम्ब्रेन आदि का निरीक्षण करते है।
- 1 महीने में बछड़े को निमोनिया या दस्त होने के खतरे होते है। इसके बचाव के लिए बछड़े को नमक चटवाना चाहिए ।
- जन्म के पश्चात बछड़े को कुछ दिनों तक विशेष ध्यान रखा जाता है तथा अगर बीमारी होने पर उपयुक्त इलाज किया जाता है।
- बछड़े के आवास का निर्माण गाय के आवास के थोड़ी ही दूर में होना चाहिए। बछड़े का बिछावन गीला नहीं होना चाहिए। बछड़े को साफ सुथरी अच्छी बिछावनय ुक्तह वादारज गहम ेर खतेह ै जहाँ उसे प्रतिकूल वातावरण जैसे- तेज गर्मी व सर्दी आदि से भी बचाया सके तथा इससे रोगों से भी बचाव होता है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

संतुलित आहार में सब्जियों के पोषक मूल्य

युगल किशोर लोधी, जितेन्द्र त्रिवेदी एवं प्रवीण कुमार शर्मा
सब्जी विज्ञान विभाग,
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, कृषकनगर, रायपुर (छ.ग.)

परिचय : हमारे दैनिक आहार में प्रतिदिन 300 ग्राम से कम मात्रा में सब्जियों का सेवन आमतौर पर कुपोषण को जन्म देता है और यह कम मात्रा अक्सर गरीबी और खराब चिकित्सा सेवाओं के साथ मिलकर, वर्तमान स्कूली बच्चों और अन्य कमजोर समूहों में मृत्युदर में वृद्धि से जुड़ी हुई है। वर्तमान में विकासशील देषें की दो प्रमुख चिताएँ भूख और कुपोषण पर काबू पाना है। इसलिए, राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों में खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।

कुपोषण दूर करने में विविध सब्जियों का बहुत महत्व है क्योंकि इनमें अत्यधिक मात्रा में पोषकतत्व, विटामिन्स व खनिज लवण मौजूद होते है। आहार विषेषज्ञ हमारे आहार को संतुलित बनाने के लिए प्रतिदिन 125 ग्राम पश्रेदार सब्जियां, 75 ग्राम अन्य सब्जियां और 100 ग्राम जड़ एवं कंद वाली सब्जियां खाने की सलाह देते हैं। सब्जियां कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन्स व खनिज लवणो का समृद्ध न्रोत हैं, इसलिए इन्हें सुरक्षात्मक खाद्य पदार्थ भी कहा जाता है।

1. कार्बोहाइडेटः-कार्बोहाइडेट भोजन में ऊर्जा का प्रमुख न्रोत हैं। कार्बोहाइडेट की दैनिक आवष्यकता 400-500 ग्राम है। आलू, शकरकंद, कसावा, जीमीकंद, अरबी,लहसुन, मटर और प्याज जैसी सब्जियां कार्बोहाइडेऊ्ट का अच्छा न्रोत है। वास्तव में शकरकंद कैलारी का सबसे सस्ता न्रोत है।

2.प्र्रोटीनः- प्रोटीन जटिल नाइट्रोजन युक्त कार्बनिक यौगिक होते है। वेप्रोटोप्लाज्म का एक प्रमुख हिस्सा बनाते हैं। प्रोटीन की दैनिक आवष्यकता 60-70 ग्राम है। मांसाहार उत्पाद की तुलना में सब्जियों में कम प्रोटीन होता हैं। हालां किसल्फ्रे-अमीनों एसिड (मिथियोनीन और सिस्टीन) अधिकांष समय वनस्पति प्रोटीन में सीमित होते हैं। मटर, बीन्स और पश्रेदार सब्जियां प्रोटीन के अच्छे न्रोत है।

3. फ्लेवोनोइड्सः- क्वेरसेटिन की तरह, सब्जियों में कैम्फ्फ्रेरोलोथेर फ्लेवोनोइड्स मौजूद होते हैं। प्याज में क्वेरसेटिन पाया जाता है। फ्लेवोनोइड्स युक्त सब्जियां उच्च रक्तचाप को रोकने में मदद करती हैं।

4. फोलेटः-फोलेट(फोलिक एसिड) हदय रोग, स्ट्रोकऔरपेट के कैंसर के खतरे को कम करता है। इनकी कमी से शिशूओं और गर्भवती महिलाओं में खून की कमी हो जाती है। पश्रेदार सब्जियां फोलिक ऐसिड का समृद्ध न्रोत है।

5. विटामिन्सः-विटामिन जैविक रूप से सक्रिय यौगिक है और सामान्य शारीरिक प्रक्रिया के लिए आवष्यक है। विषिष्ट विटामिन की कमी से निम्न प्रकार के लक्षण पैदा होते हैं-

6. खनिजः-शारीरिक गतिविधियों के क्रिया-कलाप में खनिज तत्व प्रमुख भूमिका निभाते है। वे शरीर के विभिन्न अंगो व घटको के महत्वपूर्ण घटक हैं। उदाहरण के लिए - कैल्षियम हड्डियों और दांतों का आवश्यक घटक है। आयरन हीमोग्लोबिन का महत्वपूर्ण घटक है। सी, एच, ओ और एन के साथ फास्फ्रेरसड ी.एन.ए.क े घ ाटकहै ।अ ायोडीन थायराइड हार्मोन-थायरॉक्सिन और ट्राईडोथायरोनिन के महत्वपूर्ण घटक है। कोषिकीय चयापचय के लिए मैग्नीषियम

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

विटामिन

नाम	मुख्यस्त्रोत	प्रभावशीलता	कमी के लक्षण
विटामिन ए (रेटिनॉल)	गाजर, खरबूजा, टमाटर और पश्रेदार सब्जियाँ।	त्वचा, आंखों और श्लेष्मा झिल्ली की सामान्य वृद्धि, कार्य और सुरक्षा।	शिशुओं में विकास रूकना, रतौंधी और जीरोफ्थैलमिया।
विटामिन बी-1 (थियामिन)	पालक, मटर	तंत्रिका तंत्र के लिए महत्वपूर्ण, लिवर की क्षति, अक्षमता,गर्भावस्था, मच्छरसंरक्षण (उच्च, खुराक), ऊर्जा का उत्पादन	भारी मांसपंषी और तंत्रिका गड़बडी़, थकान, हदय की कमी, बेरी-बेरीरोग
विटामिनबी 2 (राइबोफ्लेविन)	मटर,हरीपश्रेदार, सब्जियां जैसे-पालक, करी पश्रा, मूली के पश्रे, मिर्च आदि।	शरीर के विकास के लिए महत्वपूर्ण, त्वचा, आंखों और नाखूनों के लिए अच्छा, महत्वपूर्ण ऊर्जा लाने वाला, ऑक्सीजन परिवहन।	त्वचा की सूजन, भंगूर नाखून, एनीमिया, कैलस एट्रिशन।
विटमिनबी 3 (नियासिन/ निकोटीनिक एसिड)	मटर, पालक, चौलाई और लौकी।	वसा, प्रोटीन और काबोहाइड्रेट का निर्माण और ह्रास, अच्छी नींद।	त्वचा और म्यूकोसा सूजन, सिरदर्द, कांपना, नींद में अशंति, अवसर पेलाग्रा।
विटामिनबी 5 (पेंटोथेनिक एसिड)	शतावरी,पश्रेदार सब्जियाँ।	बालों के झडने, बालो और श्लेष्मा झिल्ली की बीमारियों के खिलाफ, वसा प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के निराकरण के लिए जरूरी है।	तंत्रिका की खराबी, घावों का खराब उपचार, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली।
विटमिनबी 6 (पाइरिडॉक्सिन)	आलू, हरी बीन्स फूलगोभी, गाजर।	यात्रा बीमारी, नसों का दर्द,लिवर की क्षति, प्रीमेंस्ट्रुअलसिड्रोम, प्रोटीन का पाचन, फोलिक एसिड के साथ गर्भावस्था में सबसे महत्वपूर्ण हार्मोन।	आँतों की समस्यांए, खराब त्वचा, थकान, मुँह के खुरदरे कोने।
विटामिनबी 7 (बायोटीन/ विटामिन एच)	फूलगोभी	बालो के विकास में कमी, लिवर की क्षति, चयायपचय मे सहायता करता है।	थकावट की स्थिति, त्वचा में सूजन, मांस पेषियों मेंदर्द, बालों का झडना।
विटामिनसी (एस्कॉर्बिक एसिड)	आलू, लालषिमला मिर्च, टमाटर, कोचई, पालक,मूली।	सूजन और रक्तन्नव-निरोधक, शरीर की सुरक्षा में सहायता करताहै, कोषिकाओं को रासायनिक विनाश से बचाताहै, एजाइमों को सक्रिय करता है, संयोजी ऊतक की संरचना, हड्डियों और दंत ताम चीनी, घावों का तेजी से उपचार, मानस का स्थिरीकरण।	मसूड़ोसें से खूनआना, थकान, जोडों का दर्द और सिरदर्द,घावों का ठीक से न भरना, अकुशलता, स्कर्वीरोग।
विटामिनई (टोकोफेरोल)	सूरजमूखी, साल्सीफाई पेपरोनी, कोचई।	प्रतिरक्षा प्रणाली का स्थिरीकरण, विरोधी कोषिकाओं का प्रतिस्थापन, कट्टरपंथियों से सुरक्षा, कोलेस्ट्रॉल स्तर और हार्मोन को नियंत्रित करता है।	अस्पष्टता, थकान, एमियोट्रोहिया, नापसंद, प्रजनन संबंधी समस्याएं।
विटामिन के (फ्लोक्विनोन)	कोचई,हरीसब्जी, कंद, टमाटर,जलकुंभी	रक्त के थक्के कारकों के गठन के लिए आवश्यक	विटामिन ए और ई की उच्च खुराक विटामिन के के खिलाफ काम करती है।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

कुछ सब्जियों के पोषक मूल्य

सब्जी	नमी (प्रतिषत)	प्रोटीन (ग्रामप्रति 100 ग्राम)	कैल्षियम (मिलीग्रामप्रति 100 ग्राम)	फास्फोरस (मिलीग्रामप्रति 100 ग्राम)	आयरन (मिलीग्रामप्रति 100 ग्राम)
आलू	74	1.6	10	35	0.7
करेला	92	2	20	70	1
खरबूजा	95.2	0.3	32	14	1.4
गाजर	82.2	0.9	48	30	0.6
टमाटर	94	1.2	48	26	0.4
तरबूत	95.8	32	14	12	7.9
पश्रागोभी	92	1.4	46	38	0.8
प्याज	86.8	1.2	180	50	0.7
फूलगोभी	91.7	2..4	30	76	17
फ्रेंच बीन	91	1.7	50	28	1.7
मटर	72	7.2	20	139	1.5
मिर्च	85	2.9	30	80	1.2
रखिया	96	0	30	20	1
लहसून	62.8	6.3	30	310	1.3
लौकी	96	0	20	10	0.7
स्वीटपेपर	92	1.3	10	0	1.2

आवश्यक है। जिंक कई एंजाइमों का कोफेक्टर है और शरीर में कई प्रकार के कार्य करता है।

7. आहार फाइबरः- सेल्युलोज, पेक्टिन, जाइलॉन से युक्तपादप कोषिका भिश्रि आहार फाइबर के मुख्य न्रेत हैं। आहार फाइबर कुछ कैंसर, निम्न रक्त कोलेस्ट्रॉल आदि से सुरक्षा प्रदानक रताह ै ।म सूड़ेअ ैरप ेक्टिनर क्तम ें ग्लूकोज के पोस्ट पैरांडियल स्तर को कम करते है।

इस प्रकार सब्जियाँ पोषक तत्वों का एक महत्वपूर्ण न्रेत होता है जो शरीर में सुरक्षात्मकभ ूमिका नभातेह ुएस् वास्थ्यक ो बढ़ावा देती है। विटामिनसी, टरपीन यौगिकों के परिवार का हिस्सा है जो कोषिकाओं को मुक्तकणों और आयनीकरण विकिरण से

बचाता है। कुछ टरपीन योनि, गर्भाषय, ग्रीवाऊत को के लिए बहुत सुरक्षात्मक होते है। क्रुसिफेरीकुल के सब्जियों में पाए जाने वाले ग्लूकोसिनोलेट्स, प्याज और लहसून में पाए जाने वाले एलिल सल्फाइड्स प्रतिरक्षा प्रणाली के निर्माण और विनियमन में महत्वपूर्ण कार्य करतें हैं। ये यौगिक, आइसोफ्लेवोन्स, फ्लेवोनाइड्स, इंडोल्स और अन्य न्युट्रास्यूटिकल्स के साथ संचार प्रणाली में सुधार और सुरक्षा करते है, यकृत में विषहरण गतिविधि को बढ़ाते है और विभिन्न प्रकार के कैंसर को रोकते या दबाते है। सब्जियाँ किसी भी आहार का एक मूल्यवान घटक है, जो खनिजों, विटामिनों और अन्य पोषक तत्वों का योगदान करती हैं जिनकी अन्यथा कमी हो सकती है। ये यौगिक मानव विकास को बढ़ा सकते हैं, सामान्य स्वास्थय में सुधार कर सकते है और रोग से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को मजबूत कर सकते हैं।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

पद्म पुरस्कार-2024 के लिए नामांकन 15 सितंबर, 2023 तक खुले हैं

गणतंत्र दिवस, 2024 के अवसर पर घोषित किए जाने वाले पद्म पुरस्कार-2024 के लिए ऑनलाइन नामांकन/सिफारिशें 01 मई, 2023 को खुल गई हैं। पद्म पुरस्कारों के नामांकन की अंतिम तारीख 15 सितंबर, 2023 है। पद्म पुरस्कारों के लिए नामांकन/सिफारिशें राष्ट्रीय पुरस्कार पोर्टल https://awards.gov.in पर ऑनलाइन प्राप्त की जाएंगी।

पद्म पुरस्कार, अर्थात पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में शामिल हैं। वर्ष 1954 में स्थापित, इन पुरस्कारों की घोषणा प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। इन पुरस्कारों के अंतर्गत 'उत्कृष्ट कार्य' के लिए सम्मानित किया जाता है तथा ये कला, साहित्य एवं शिक्षा, खेल, चिकित्सा, समाज सेवा, विज्ञान एवं इंजीनियरी, लोक कार्य, सिविल सेवा, व्यापार एवं उद्योग आदि जैसे सभी क्षेत्रों/विषयों में विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों/सेवा के लिए प्रदान किए जाते हैं। सभी लोग इन पुरस्कारों के पात्र हैं चाहे उनका कोई पंथ, व्यवसाय, पद या लिंग हो। चिकित्सकों और वैज्ञानिकों को छोड़कर अन्य सरकारी सेवक, जिनमें सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में काम करने वाले सरकारी सेवक भी शामिल है, पद्म पुरस्कारों के पात्र नहीं हैं। सरकार पद्म पुरस्कारों को **पीपल्स पद्म** बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। अतः सभी नागरिकों से अनुरोध है कि वे नामांकन/सिफारिशें करें। नागरिक स्वयं को भी नामित कर सकते हैं। एक व्याख्यात्मक प्रशस्ति-पत्र (अधिकतम 800 शब्द) भी जिसमें अनुसंशित व्यक्ति की संबंधित क्षेत्र/विषय में विशिष्ट और अनन्य उपलब्धियों/सेवाओं का स्पष्ट उल्लेख हो, प्रस्तुत किया जाए।

महिलाओं, समाज के कमजोर वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों, दिव्यांग लोगों तथा समाज की निःस्वार्थ सेवा करने वाले लोगों में से उन प्रतिभावान व्यक्तियों की पहचान हेतु मिलकर प्रयास किये जाये, जिनकी उत्कृष्टता और उपलब्धियां वास्तव में सम्मान की हकदार हैं।

इस संबंध में और विस्तृत विवरण गृह मंत्रालय की वेबसाइट (https://mha.gov.in) पर 'पुरस्कार और पदक' शीर्षक के अंतर्गत और पद्म पुरस्कार पोर्टल (https://padmaawards.gov.in) पर उपलब्ध हैं। इन पुरस्कारों से संबंधित संविधि और नियम वेबसाइट पर उपलब?ध लिंक https://padmaawards.gov.in/AboutAwards.asp& पर उपलब?ध हैं।

RNI No. CHHHIN/2017/74986 Postal Regd. No. C.G./RYPDN/95/2018-20, Email:cgkrishivanik i@gmail.com

छत्तीसगढ़ कृषि वानिकी

हिन्दी मासिक पत्रिका

189, नहरपारा (कापा) मोवा, रायपुर, छत्तीसगढ़-492004, मोबाइल: 73548-71089, 98263-23280

पत्रिका सदस्यता फार्म

नाम---------- पता-ग्राम/मोहल्ला ----------

विकासखंड----------जिला ----------राज्य ---------- पिनकोड ----------

फोन/मोबाइल ---------- ईमेल ----------

ग्राहक शुल्क:

एक वर्ष : रू. 500 ------ दो वर्ष : रू. 950 ----- तीन वर्ष : रू. 1300------ आजीवन : रू. 11000 ------

मैं एक नया ग्राहक हूँ/मेरी सदस्यता का नवीकरण करें। कृपया मेरा नाम छत्तीसगढ़ कृषि वानिकी की ग्राहक सूची में दिनांक ---------- --से ---------- तक के लिए दर्ज कर लीजिए। मैं एक/दो/तीन वर्ष /आजीवन, का शुल्क रू. 500/रू. 950/रू. 1300/रू. 11000, नगद/डिमांड ड्रॉफ्ट सं ---------- दिनांक ---------- 'छत्तीसगढ़ कृषि वानिकी, रायपुर' के नाम से भेज रहा/खाता में राशि स्थानांतरित कर रसीद भेज रहा हूँ/पत्रिका के प्रतिनिधि श्री ---------- मोबाइल ----------को नगद प्रदाय किया गया।

Bank Account Details:

1. Chhattisgarh Krishi Vaniki,
2. Bank Name : Bank of India
3. IFSC Code : BKID0009355,
4. MICR Code of the Branch : 492013007
5. Type of Account : Current,
6. Bank Account No. - 9355 2011 0000 339

ग्राहक का हस्ताक्षर

प्रतीक एग्रीटेक

ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता

अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

मछली-सह-सूकर पालन

डॉ. रामचंद्र रामटेके, डॉ.मनोज गेंदले, डॉ. डी.के.जोल्हे , डा.के.आर.बघेल डा.आशुतोष तिवारी एवं डा. जागृति कृष्णण
दाऊ श्री वासुदेव चंद्राकर कामधेनू विश्वविदयालय, दुर्ग

- **सूकर के मल** - मूत्र के प्रयोग से मछली का उत्पादन ज्यादा होता हैं, जो लोग सूकर पालन करतें हैं, उनके लिए मछली सह सुकर पालन अतिरिक्त आय का स्त्रोत हैं।
- सूकर ज्यादा खाने के वजह से पचाता कम हैं, और अनपचा भोजन व मल - मूत्र के साथब ाहर नकालताह ैंज ोि कप ोषक तत्व से भरपूर होता हैं। इसे मछली चाव से खाती हैं तथा पचा हुआ भोजन तालाब में खाद के लिए उपयोग में आता हैं जिससे पूरक आहार और खाद के खर्च से बचा जा सकता हैं।
- सुकर को खिलाये जाने वाले भोजन के झुठन का उपयोग मछलियों को खिलाने में किया जाता हैं जिससे भोजन का समुचित उपयोग हो जाता हैं।
- तालाब के तल के किचड़ का प्रयोग खेतों में किया जा सकता है, यह बहुत अच्छा खाद होता हैं।

पालने योग्य सूकर की प्रजातियां:-

क्रं.	नस्ल	प्रजनन क्षमता/ब्यात	बढ़त दर /6 माह (किलो)
1.	देशी सूकर	4 - 7	30 - 40 किलो
2.	टेमवर्थ	10 - 15	50 किलो
3.	मिडिल व्हाइट यार्कशायर	10 - 15	50 किलो
4.	टेमवर्थ ' देशी क्रास	6 - 12	60 किलो
5.	मि.व्हा.यार्कशायर 'देशी क्रास	6 - 12	70 किलो

सूकर की आवास व्यवस्था:-

1. तालाब के किनारे सूकर का घर बनायें ।
2. आवास से तालाब तक नाली की व्यवस्था करें,ताकि आवास का धोवन,मल-मूत्र तालाब में बहकर जा सकें ।
3. सूकर के घर की जमीन पक्की तथा खुरदरी हों।
4. घर की दिवार 3 फीट तक पक्का हो ।
5. घर के सामने खुला बरामदा होना चाहिए ताकि सूकर वहां घुम फिर सकें ।
6. घर के एक कोने में पीने के पानी की भी व्यवस्था करें ।
7. सुकर के बढ़ते बच्चों को 8-12 तथा व्यस्क सूकर को 60 - 70 वर्गफीट जगह मिलनी चाहिए ।
8. गर्मी से सुकर को बचाने की जरूरत हैं, इसलिए आवास के आस - पास पेड़ पौधें लगाना चाहिए ।

सूकर के बच्चों का परिवहन:-

बच्चों के जन्म के एक सप्ताह के भीतर बिमारी से बचाने के लिए टीकाकरण करवाना चाहिए। 1-1.5म ाहके ब ादद ूधछ ोड़नेके ब ादह ी पालने के लिए खरीदना चाहिए ।

सूकर की आहार व्यवस्था:-

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

- सूकर सब कुछ खाता हैं लेकिन बढ़त के लिए धान की भूसी व खली वृद्धि के लिए देना चाहिए ।
- धान की भूसी व कोढ़ा आधा किलो छोटे बच्चों के लिए प्रतिदिन प्रति बच्चे के हिसाब से दें। (उम्र अनुसार)
- उम्र के अनुसार भोजन की मात्रा बढ़ाते रहना चाहिए ।
- बड़े सूकर को 1.5 किलो प्रतिदिन आहार देना चाहिए ।
- इसकेअ लावार सोईध् ारक ाब चाह ुआ खाना,आलू, शकरकंद, मूली के पत्ते, हरा चारा दे सकते है।
- बूचड़ खाने से प्राप्त अनुपयोगी मांस को उबाल कर दे सकते हैं।
- होटल के झूठन को भी सूकर के भोजन के लिए उपयोग किया जा सकता हैं।

तालाब की तैयारी व जीरा संचयः-

तालाब की तैयारी मिश्रित मत्स्य पालन की तरह करें, खाद के रूप में अन्य खाद के बदले सूकर के खाद का उपयोग करें, जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति व गुणवत्ता बढ़ती हैं। चूंकि तालाब में मछलियों के भोजन एवं स्थान निश्चित हैं, इसलिए तालाब में पाली जानी वाली मछलियों का अनुपात भी निश्चित होनी चाहिए। तालाब में कम से कमा तीन प्रकार की मछलियों को पालना चाहिए, ताकि तालाब के सभी जगह का समुचित उपयोग हो सकें। साथ ही साथ सभी प्रकार के भोज्य पदार्थों का भी उपयोग हो सकें। तालाब में कम से कम 3 प्रकार की मछली रोहू: कतला: कामन कार्प 30: 30: 40 अनुपात में संचय अवश्य करना चाहिए। मछली सह सूकर पालन में कॉमन कार्प की बढ़त अच्छी होती हैं, इसका संचय साल में 2 बार किया जा सकता हैं। फरवरी-मार्च में सिर्फकॉमन कार्प के बीजों का संचय करें। जुलाई-अगस्त में मिश्रित बीजों का संचय करें। परंतु कॉमन कार्प के बीजों के संचय की मात्रा बढ़ा दें ।

बीज संचय में सावधानियां :-

बीज या जीरा ऑक्सीजन वाली पॉलीथिन में लायें । इससे परिवहन के दौरान मृत्युदर कम होती हैं।

1. मछली बीज का संचय सुबह या शाम के समय करना चाहिये जब पानी ठंडा हों । इससे मृत्युदर
   कम होती है।
2. पॉलीथिन के थैली में भरे जीरे को सीधे पानी में न डालें इसे थोड़ी देर तालाब के पानी में रखें ।
   ताकि थैली और तालाब का तापमान बराबर हो जाये ।
3. जीरा या बीज को स्वत: पॉलीथिन के थैली से तालाब में जाने दें ।
4. संचय के दिन तालाब में पूरक आहार न डाले ।
5. एक गमछे को पानी में डुबाते हुए चारों तरफ से पकड़े और उसमें पहले मछली को छोड़े और उसके
   ऊपर पोटेशियम परमेंग्नेंट को डाले इससे मछली का विकास अधिक होता हैं।
6. मछली बीज संचय में कोशिश करना चाहिये कि बीज की लंबाई व बीज दर मानक अनुसार हो
   जिससे मछली में आपसी प्रतिस्पर्धा नहीं होगा। और मछली का उत्पादन अच्छा होगा।
7. मछली बीज हमेशा अच्छे हैचरी जिसकी बीज में गुणवत्ता हो ऐसे फर्म से ही लेना चाहिये।

मछली का आहार प्रबंधनः-

चावल का कोढ़ा एवं सरसों की खली 1: 1 अनुपात में 1 किलो चावल का कोढ़ा व 1 किलो सरसों की खली अच्छें से मिलाकर व बारिक पीसकर दे सकते हैं।

1. मछलियों को खाना सुबह-शाम एक निश्चित जगह पर ही डाले ताकि मछली को आदत ही जाये और मछली उस जगह पर आकर भोजन ग्रहण करें।
2. साथ ही 1 प्रतिशत खनिज लवण भी देना चाहिए। 2 किलोग्राम पूरक आहर में 20 ग्राम खनिज लवण।
3. इसके अलावा किसी बोरे में खाना डालकर उसमें छोडकर दे और उसे तालाब में डाल दें।
4. जैसे- जैसे खाना खत्म होगा बोरा अपने आप ऊपर आ जायेगा।
5. तालाब में 4 जगह में बोरे में खाना डाले, अगर बोरे में नही डालते है। तो उसे एक निश्चित जगह में ही खाना डालना चाहिए।
6. इसके अलावा गेंहूं का चोकर, अन्य अनाज की खली, मक्के का चोकर, जौ का चूर्ण, कनकी, सोयाबिन का चूरा आदि पूरक आहार में इस्तेमाल कर सकते है।
7. इसके अलावा मछली का चूरा, रक्त चूर्ण, हड्डी का चूरा, मेढक खाद्य, मट्ठा, सपरेटा, मांस का छिछड़ा, घोंघा, सीपी, आदि खाने में मिलाकर दिया जा सकता है।

मछली सह सूकर पालन में देखभालः-

- सूकर के मल-मूत्र जाने के लिए आवास से तालाब तक नाली का निर्माण करना चाहिए ।
- यदि पानी का रंग हरा हो गया हो तो खाद या आहार तुरंत बंद कर देना चाहिए ।
- तालाब में चूने का प्रयोग समय-समय पर करना चाहिए ।
- सूकर को संक्रमण से बचाने के लिए सुकर के आवास का रखरखाव, स्वच्छता, प्रकाश एवं छाया का इंतजाम करना चाहिए ।
- सुकर को प्रति दिन अच्छे से नहलाना चाहिए ।
- आवास की सफाई प्रति दिन की जानी चाहिए ।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

- सप्ताह में एक दिन कीटाणु नाशक का प्रयोग करना चाहिए ।
- सूकर का टीकाकरण समय पर कराना चाहिए ।

गर्भवती सूकर को प्रसव के 10-15 दिनप हलेअ लगर खनेक ी० यवस्थाक रनी चाहिए । तथा उस घर के चारों ओर गार्डरेल दिवाल से 9 इंच दूर तथा जमीन से 9 इंच ऊपर लोहे या लकड़ी की 3-4 मोटी बल्ली से बनायें, ताकि नवजात बच्चे गार्डरेल में रह सके, और प्रसूति सूकरी के और दीवार के बीच में आकर बच्चे दब कर मर न जायें ।

सूकर में होने वाली प्रमुख बिमारियां:-

साधारणत: सूकर में बिमारियां कम होती हैं, लेकिन सही देखभाल के अभाव में बिमारी के कारण सूकरों की मृत्यु हो सकती हैं। जिनमें बिमारी के मुख्य कारण जीवाणु, विषाणु, परजीवी जनित रोग, खनिज लवण एवं विटामिन की कमी के कारण होता हैं।

अ. खनिज, लवण एवं विटामिन की कमी से होने वाले रोग:-

1.ि पगलेटए नीमिया:-यह रोग सूकरों में आयरन की कमी से होता हैं। इसमें सूकर कमजोर एवं सुस्त हो जाता हैं। इसे दूर करने के लिएज न्मक े ब ाद1 ए म.एल.अ ायरनक ा इंजेक्शन देते हैं या मादा के थन में $CuSO_4$ - 75 ग्राम व $FeSO_4$ -450 ग्राम, शक्कर - 45 ग्राम लेकर 2 लीटर पानी में घोल के लेप लगाते हैं। यह कई दिनों तक लगाया जाता हैं।

2. पैराकेराटोसिस : यह जिंग की कमी से होताह ैं इ समेंत वचास ामान्यस े ख ुरदूरीव मोटी हो जाती हैं। त्वचा के प्रभावित जगह के बाल गिरने लगते हैं। सुकर की वृद्धि दर में कमी आ जाती हैं। शरीर भार कम हो जाता हैं। सूकर के आहार में जिंक मिला देना चाहिए ।

3. कॉपर की कमी:- शरीर का पिछला हिस्सा कमजोर हो जाता हैं। सूकर को चलने में कठिनाई होती हैं। तथा टांगे लड़खड़ाने लगती हैं तथा एनीमिया हो जाता हैं। इसकी कमी को पूरा करने के लिए 125-250 मिलीग्राम कॉपर आहार में मिला कर देना चाहिए ।

4. आयोडीन की कमी:- इसकी कमी से नवजात शिशु के शरीर में बाल उत्पन्न नही होते हैं। कई सूकर पैदा होते ही मर जाते हैं। बचे हुए बच्चों में घेंघा रोग हो जाता हैं। पैरों में कमजोरी हो जाती हैं तथा चलने में कठिनाई होती हैं। इसकी कमी को दूर करने के लिए गर्भवती मादा सूकरी को 200 मिलीग्राम पोटेशियम आयोडाइड/किलोग्राम शरीर भार के हिसाब से आहार में देना चाहिए । इसके अलावा बच्चों कों 200 मिलीग्राम पोटेशियम आयोडाइड देना चाहिए । या फिर आयोडीन को पेंट करके सूकर के थन में दो बार लगा देंगे तो आयोडीन की कमी दूर हो जाती हैं।

5. विटामिन ''डी'' की अल्पता:- सूकर को लगभग प्रतिदिन 30 मिनट धूप में रखना चाहिए । तथा आहार में कैल्शियम, फास्फोरस व विटामिन डी मिला कर देना चाहिए ।

6. विटामिन ''ए'' की अल्पता:- त्वचा खुरदरी हो जाती हैं। आंखों की पुतली में श्वेतपनअ ाज ाताह ैं ार तौंधीक ाब ीमारीह ो जाती हैं। प्रजनन क्षमता कम हो जाती हैं।

ब. जीवाणु जनित रोग:-

(अ) जीवाणु जनित दस्त:-इसमें छोटे-छोटे बच्चों मे दस्त ज्यादा होता हैं। शरीर में पानी की कमी हो जाती हैं। इसकी वजह से बच्चे मर जाते हैं।

कारण:-दुषित आहार या पानी की वजह से ।

उपचार:- Electrolite (ओ.आर.एस) का घोल देना पड़ता हैं तथा एन्टीबायोटीक (सल्फा ड्रग) के साथ लिवर टानिक देना जरूरी हैं।

(ब) गलघोंटू (एच.एस.):-य ह बमारी सुकरों में होती हैं।

कारण:-यह दूषित आहार व पानी की वजह से होती हैं।

लक्षण:-तेज बुखार और नाक, मुंह से पानी गिरता हैं। गले में सूजन आ जाती हैं। जानवर खाना पिना त्याग देता हैं।

उपचार:- एन्टीबायोटीक सल्फा ड्रग एवं आक्सिटेऊटरासाइक्लिन के साथ लिवर टानिक

बचाव:-रोगग्रस्त पशु को स्वास्थ्य पशु से अलग रखना चाहिए, तथा बारिश के पहले टीकाकरण करना चाहिए ।

स. विषाणु जनित रोग:-

(अ) सूकर ज्वर (Swine fever)

यह अत्यंत संक्रामक रोग हैं। इनसे सूकर पालकों को काफी क्षति पहुंचती हैं।

कारण:-ब ीमारस ूकरोंके म ल-मूत्र,द ूषित खाना पानी तथा बीमार पशुओं के साथ रखने के कारण होता हैं।

लक्षण:-इसमें बिना किसी लक्षण के मृत्यु हो जाती हैं। इसमें 1060- 1070 थ् तेज बुखार होता हैं। इसमें भूख में कमी, चलने में लड़खड़ाहट,श ारीरक ी त वचाम ें ल ालध ब्बे दिखाई देते हैं। इसमें आंखे लाल हो जाती हैं तथाइ सब ीमारीक इ लाजन हींह ैं इ सका टीकाकरण 8 सप्ताह में होता हैं। एक साल तक रोग प्रतिरोधक क्षमता होती हैं, तथा 1 एम.एल मांस पेंशी में लगाते हैं।

(ब) खूर पंका मुहपका बिमारी (F.M.D.):- यह विषाणु जनित रोग हैं। यह गाय, भैंस,सूकर, भेड़ व बकरी में होने वाला विषाणु जनित बीमारी है जिसमें विषाणु जीभ, पैर, खुर तथा आस-पास की त्वचा में आक्रमण करता हैं। संक्रमण के स्थान पर छाले बन जातें हैं। रोगी पशु को बुखार आने लगता हैं। मुंह और खुरों में छाले दिखाई देता हैं और पैरों में लगड़ापन शुरू हो जाता हैं।

उपचार:-इस रोग में स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए, रोगी पशु के मुंह को 2 प्रतिशत फिटकरी के घोल या 5 प्रतिशत पोटेशियम परमेंग्नेट (लाल दवा) के घोल से धोना चाहिए। इसके अलावा ग्लिसरीन तथा शहद को 1:7 के मिला कर जीभ के छालों पर लगाने

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइल: 9827999717, 7389840407

से दर्द से राहत मिलती हैं। तथा घाव भरने में सहायता मिलती हैं। रोग ग्रस्त सूकरों को नरम और जल्दी पचने वाला उपयुक्त चारा खाने को देना चाहिए। इससे अलावा चांवल का माड, गेहूं का दलिया, गूड़ के साथ काफी लाभदायक होता हैं। तथा एन्टीबॉयोटिक देते हैं।

बचाव:-रोग से बचाव के लिए आवास के बाहर चूना छिड़क दें । तथा जूट के बोरों को 2-4 प्रतिशत फार्मिलीन के घोल में भिगोंकर पशु के बाड़े के सामने बिछा दें,अतथा प्रवेश द्वार में यदि 1-2 इंच गहराई तक घोल भर दे तो बाहर से आने वाले लोगों में संक्रमण आने की संभावना कम हो जाएगी । इस रोग से बचाव के लिए सूकरों को F.M.D. का टीका लगाना चाहिए । पहला टीका 8 सप्ताह और दूसरा 6 माह के बाद लगाना चाहिए ।

द. परजीवी रोग

अ. गोल कृमि - ये सुकरों में मुख्य रूप से पाया जाता हैं और अधिक हानि का बहुत बड़ा कारण होता हैं, यह 15 से 40 सेमी. लम्बा होता हैं। यह सुकर के छोटी आंत में पाया जाता हैं। सूकरों में इनका संक्रमण संक्रमित पशु के जल के साथ निकले अण्डों को ग्रहण करने के कारण होता हैं।

लक्षण:-संक्रमित पशुओं में बेचैनी, दस्त या कब्ज, वृद्धि या प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती हैं। अधिक संख्या में पाये जाने पर यह आंत को पूर्णरूप से अवरूद्ध भी कर सकता हैं, जिससे सूकर के भार में कमी तथा मृत्यु भी हो सकती हैं।

उपचार या बचाव:-लक्षण देखने पर मल परिक्षण कर उचित उपचार तथा विषेष दवाईयों से उपचार करा सकते हैं। इसके लिए ।Albendazole, Fenbendazole दवाई दिया जाता हैं।

ब. Flat worm (फीताकृमि):-Tania Solium नामक फीताकृमि हैं। यह अवस्था Tania Solium के अण्डे खाने से होता हैं। इनमें सूकर में शुरू में कोई लक्षण नहीं दिखाई देता हैं। लेकिन Tania Solium के लक्षण से ग्रसित सूकर के मांस को बिना पूर्ण रूप से पकाये खाने से मानव में यह संक्रमण होता हैं। इसके अण्डे मनुष्य के मल से निकलते हैं, और संक्रमित मल खाने के कारण सूकर फीताकृमि से ग्रसित हो जाता हैं। अत: सूकरों को इस लक्षण से बचाने के लिए सूकर को मानव मल नहीं खाने देना चाहिए ।

स. पर्ण कृमि (Fasiolisis) : यह सूकर के आंत में पाया जाता हैं। इससे संक्रमित सूकरों में दस्त, पेट दर्द, बेचैनी जैसे लक्षण दिखते हैं। इसका निदान हेतु पशुओं का नियमित रूप से मल परिक्षण कराना चाहिए तथा संक्रमित सूकरों का उपचार कृमिनाशक जैसे Oxyclosanide या Niclosomide से कराना चाहिए ।

इ. **Coccidiosis** : यह प्रोटोजोआ जनित बीमारी हैं। यह सभी उम्र के सूकरों में पाया जाता हैं तथा नवजात सूकरों में इसके लक्षण दिखाई देते हैं। और उनकी मृत्यु का कारण भी बन जाते हैं दूषित जल तथा आहार ग्रहण करने के कारण होता हैं। नवजात सूकरों में अधिकतर यह रोग 5-15 दिन के बीच में होता हैं। जिसके कारण पीला दस्त, पेंचिस हो जाता हैं। जानवर सुस्त हो जाता है, दूध पीना बंद कर देता हैं। इससे नवजात सूकरों का पूरा समुह प्रभावित होता हैं। दस्त कई दिनों तक रहने के कारण पनी कमी हो जाती हैं।

उपचार:-Sulpha drug, Sulphadimidine आदि दवाई का उपयोग करना चाहिए ।

ई. बाह्य परजीवी:- सूकरों में विभिन्न प्रकार के बाह्य परजीवी पाये जाते हैं ये सूकर की त्वचा में पाये जाते हैं। और खून चूसकर सूकर के स्वास्थ्य को हानि पहुंचाते हैं जिससे सूकर की उत्पादन क्षमता कम हो जाती हैं। यह विभिन्न रोगों के लिए रोग वाहक का कार्य करते हैं।

चनाबूट के मजा

खेत खार मा हरियर हरियर, सुघर चना लहराथे।
रद्दा रेंगत मनखे मन के, लार घलो चुचवाथे।।
पोठ पोठ अउ गुरतुर गुरतुर, चना बूट के दाना।
नान नान अउ कोंवर कोंवर, होथे ओखर पाना।।
अबड़ विटामिन रहिथे येमा, आलस दुरिहा जाथे।
चना बूट सँग भाजी पाला, काम दुनों हर आथे।।
जूरी बाँधे बेचे ओला, पैसा खूब कमाथे।
लइका लोगन जम्मो संगी, कूद कूद के खाथे।।
कोनो खाथे कच्चा दाना, कोनो भूँजे होरा।
सुखों सुखों के घर मा लाथे, भरथे बोरा बोरा।।
रहे गोरसी आगी अँगरा, दिखे कोयला लाली।
भूँज भूँज के राखे रहिथे, इहाँ सबो घरवाली।।
हमर राज मा मिलथे सुग्घर, चना बूट के होरा।
आन राज के मनखे आके, लेगय बोरा बोरा।।
मौसम मौसम फसल उगाथे, इही हरे चिन्हारी।
हँसी खुशी ले करे किसानी, मिल के सब नर नारी।।

//रचनाकार//
प्रिया देवांगन 'प्रियू'
राजिम, जिला - गरियाबंद, छत्तीसगढ़

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइल: 9827999717, 7389840407

अंतः परजीवियों से होने वाले रोग

चारु कुणाल, स्मिता देवांगन, तृप्ति कुशवाहा, रीना सिंह, डॉ दीपक कुमार कश्यप, डॉ ओम प्रकाश एवं डॉ मयंक सिंह
वेटरनरी पॉलिटेक्निक, सूरजपुर
दाऊ श्री वासुदेव चंद्राकर कामधेनू विश्वविद्यालय, अंजोरा, दुर्ग

रोग वह हानिकारक विचलन (बदलाव) जिसका प्रभाव जीव पर एवं उसकी उत्पादन या कार्यक्षमता पर पड़ता है, रोग / बिमारी कहलाती है। हम पशुओं में होने वाले रोगों अनदेखा या छोटा समझते है जिसका उपचार आवश्यक है सामान्यत- रोगी पशु द्वारा पशु द्वारा उत्पादकता कम हो जाती है जिससे कम लाभ होती है, काम करने की क्षमता कम हो जाती है, रोगी पशु की मृत्यु की सम्भावना हो सकता है। जिसके कारण किसानोंक ोए वंप शुम ालिकोंक ोअ ार्थिक नुकसान व स्वास्थ नुकसान उठाना पड़ता है । कुछ रोग पशुओं से मनुष्यों में भी फैल सकती है।

परजीवी वह होते है जो दूसरे जीव के शरीर मे रहकर उससे अपना आहार / भोजन प्राप्त करते हैं। उदा.किलनी, जूं ,पिस्सु, खटमल, कृमि आदि।

अंतः परजीवी से का मतलब है की वह परजीवी जो जीव/जानवर शरीर के अंदर रहते हैं। जैसे - कृमि इसके कारण जानवर का शरीर कमजोर हो जाता है तथा यह कई खतरनाक बिमारियां को फैलाने का भी काम करते हैं।

अंतः परजीवियों से होने वाले रोग

छेरो रोग (फॅसिओलोसिस): यह फॅसिओला नामक परजीवी के कारण फैलता है जोअ धिकतरय कृतम ेर हकरअ पनाअ सर डालते हैं।

रोगी :प शुग ाय,भ ैंस,भ ेड,ब करियोंत था इनसानो में बिमारी फैलाती है।

लक्षण

- दस्त / पेचिस
- पेट दर्द
- खून कि कमी
- निचले जबड़े के निचे तरल जैसे का जमाव।
- प्राकृतिक द्वार जैसे नाक, मुह, मलद्वार से रक्त का आना कुछ देर बाद जम जाना।
- शरीर में पानी की कमी हो जाना जिससे त्वचा शुष्क हुआ खुरदरी हो जाती है।
- खाना कम कर देना।

उपचार एवं रोकथाम

- पशु को समय समय पर कृमि नाशक दावा खिलाना चाहिए।
- पशु को पिलाए जाने वाला पानी साफ हो।
- घोंघी वाले स्थान से दूर रखना व घोधी को नष्ट करना।
- पशु को पशुचिकित्सक को दिखाना।

रूमेन कृमि रोग / पेट कृमि रोग

इसे इसे एम्फिस्टोमोसीस भी कहते है तथा यह रूमेन जो एक जुगाली करने वाले पशु के पेट का प्रथम भाग होता है में पाया जाता है जिस कारण इसे रुमेन कृमि रोग भी कहते हैं तथा यह एम्फिस्टोम जाति के परजीवी द्वारा फैलता है।

रोगी पशु : यह सभी जुगाली करने वाले जानवरों में हो सकता है तथा यह भी घोघा द्वारा फैलाया जाता है जो परजीवी को पानी मे व आहार / चारे में छोड जाते है

लक्षण

- पानी की तरह दस्त होना व दस्त म बदबू आना
- पशु बेचैन होना
- शरीर में गले या आगे के पैरों के बीच तरल जमा हो जाता है
- फेफड़ों में पानी भर जाने के कारण हांफना
- ज्यादा प्यास लगना
- पेट में दर्द

उपचार : पूर्व की बीमारी की तरह

विलहर्जिया / घोंघा बुखार / खर्राटा रोग / गोताखोर या मछुआरा खुजली

यह बीमारी सिस्टोसोमा नाम के परजीवी के कारण होता है जो पशु के रक्त/खून प्रवाह में भी चला जाता है तथा मनुष्यों में रहकर खुजली करता है यह कई बार नाक की नसों में बस जाता है तथा समस्या उत्पन्न करता है

रोगी - यह गाय, बैल, भेड़, बकरियों सूअर एवं मनुष्य में भी होती है तथा यह भी घोंघी व दूषित जल व भोजन द्वारा फैलाई जाती है

लक्षण

- रक्त की कमी जिसके कारण शरिर पीला दिखाई देने लगता है।
- नाक, आंख की अंदर की झिल्ली पीली दिखाई देती है।
- नसों में सुजन आ जाती है।
- कभी-कभी नसें फट जाती है जिससे रक्त के थक्के दिखाई देते हैं।
- मूत्र व गोबर में, नाक की नसों में परजीवी संक्रमण के कारण कभी कभी खून आता

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

है।

आंत में संक्रमण होने पर

- दस्त तथा कभी कभी दस्त में खून के थक्के दिखाई देते हैं।
- चमड़ी लाल दिखाई देता है।
- दाने निकल आते है।
- कभी कभी मवाद भी आता है।
- पहचान की पुष्टि के लिए हमेशा पशु चिकित्सक की सहायता लें।

उपचार एवं बचाव

- घाव जैसे दिखाई देने पर उसे सामान्यत: पोटेशियम परमैग्नेट (लाल पाउडर) को एक चुटकी को बाल्टी में घोलकर साफ कर सकते है।
- कृमिनाशक दवा समय समय पर पिलाना।
- घोंघी को नष्ट करना एवं पशु को वहां ना ले जाना जहां घोंघी अधिक पाये जाते हैं।
- साफ पानी व खाना / चारा देना।
- पशुचिकित्सक की सहायता लेना।

हिमन्कस कृमि रोग / नाई पोल लार्म / पेट कृमि रोग : यह बिमारी हिमन्कस नामक परजीवी के कारण होता है तथा यह पशु के पेट में रहकर उसका खून पीते हैं जिससे पशु कमजोर हो जाता है जो मुख्यत: दूषित जल एवं आहार से होता है।

रोगी : गाय भैंस, भेड, बकरी

लक्षण

- रक्त कि कमी जीसके कारण पशु कमजोर दिखाई देता है।
- त्वचा पीली हो जाती है।
- सांस लेने में दिक्कत।
- खूनी दस्त (लाल रंग की दस्त जो खून के थक्कों के कारण होता है।
- दोनों आगे के पैरो के बीच में व निचले जबड़े के नीचे तरल का जमाव हो जाता है जीससे वह फूल जाता है।

उपचार एवं बचाव

- पशु को समय समय पर कृमि नाशक दवा खिलानी चाहिए।
- उन्हें पानी की अधिक मात्रा देना चाहिए जीसमे थोडी मात्रा में हल्दी मिला देना चाहिए ताकि घावों को जो पेट के अंदर हैं ठीक होने में मदद हो सके।
- जल्द से जल्द पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

कुछ सामान्य घरेलू उपचार :

रक्त की कमी होने पर

- आवले के 50 ग्राम फल को / छाल को पिसकर प्रतिदिन खिलाए।
- शरीर में पानी की कमी होने पर नमक दो चम्मच, मीठा सोडा आधा चम्मच और 4 चम्मच चीनी 1 लीटर पानी में घोलते हैं तथा एक व्यस्क पशु को 2 से 3 लीटर 2 से 3 बार पिलाते हैं।

दस्त अधिक होने पर

- मुठठी भर चाय की पत्ती को 1 ली. पानी में उबालकर निथार लेते है तथा उसके साथ सोंठ पाउडर (पिसा अदरक) मिलाएं।
- 3 ग्लास पानी में आधा द्मद्द अमरूद की पति को (ताजी) उबाले दिन में दो बार पिलाएं

कुछ सामान्य रोकथाम / सुरक्षा के उपाय

- पशुओं के रहने के स्थान साफ सुथरा ।
- पशुओं को साफ पानी व चारा देना चाहिए।
- उन्हें नियमित रूप से साफ करना चाहिए।
- पशुओं के रहने/खाने/ पिने के स्थान पर घोंघे को आने से रोकना चाहिए।
- पशुओक ोस मयस मयप रक ृमीनाशक दवा खिलानी चाहिए।
- पशुओ को आवश्यक टीके अवश्य से लगवाने चाहिए।
- पशुओं की नियमित जांच करानी चाहिए।
- किसी भी पशु को रोग की शंका होने पर अलग या अन्य पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- नए पशु को खरीदते समय टीके एवं उसकी अन्य सभी स्वास्थ्य संबंधी बातों का ब्यौरा ले लेना चाहिए।
- नए पशु के आने पर उसे कम से कम 10 दिन अलग से निगरानी में रखना चाहिए।
- रोग से ग्रसित पशु की मृत्यु हो जाने पर उसे शीघ्रह ीउ चिर्ता वधिस`ि नपटानक रना चाहिए।

यंग साइंटिस्ट अवार्ड 2023 से सम्मानित हुए युवा वैज्ञनिक

रायपुर 05 मई 2023 : छत्तीसगढ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद तथा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रेक्षागृह में दो दिवसीय 18 वें युवा वैज्ञानिक सम्मेलन का 04 मई को समापन हुआ। इस समारोह में 19 चिन्हित विषयों में युवा वैज्ञानिकों को यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड- 2023 प्रदान किया गया। इसके साथ ही इन युवा वैज्ञानिकों को 21 हजार रूपए पुरस्कार राशि, मेडल तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइल: 9827999717, 7389840407

छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री वृक्षारोपण प्रोत्साहन योजना

उद्देश्य

1. कृषकों के निजी क्षेत्र (जहां वर्ष 2020 मे धान की खेती किया गया हो तथा शासन को धान का विक्रय किया गया हो), वन अधिकार पत्र धारक की भूमि, शासकीय विभागों, संयुक्त वन प्रबंधन समिति एवं ग्राम पंचायतों की राजस्व भूमि पर ईमारती, गैर ईमारती प्रजातियों के वाणिज्यिक/औद्योगिक वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देना।
2. पर्यावरण में सुधार लाकर जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभावों को कम करना।
3. कृषकों की आय में वृक्षारोपण के माध्यम से वृद्धि करना।
4. निजी तथा सामुदायिक भूमि पर वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाकर, काष्ठ का उत्पादन बढ़ाया जाकर काष्ठ के आयात में उत्तरोत्तर कमी लाना तथा वनों में उपलब्ध काष्ठ पर जैविक दबाव को कम करते हुये, वनों को सुरक्षित रखा जाना।
5. वृक्षारोपण को बढ़ावा देकर बाढ़, अनावृष्टि आदि को नियंत्रित करना तथा भूमि के जलस्तर को उपर उठाना।
6. उद्योगों की लकड़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति, बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन, जी.डी.पी. में वृद्धि लाना।

योजना की पात्रता

1. छत्तीसगढ़ राज्य के सभी कृषक जो वर्ष 2020 में धान की खेती कर धान को शासन को बेचे हो।
2. वे वन अधिकार पत्र धारक व्यक्ति जिनके द्वारा पिछले वर्ष शासन को धान विक्रय किया गया था और अब वे अपनी भूमि पर धान के बदले वृक्षारोपण करना चाहते है।
3. वन अधिकार पत्र धारक जो नये सिरे से अपनी भूमि पर वृक्षारोपण करना चाहते है।
4. सभी ग्राम पंचायत एवं संयुक्त वन प्रबंधन समितियां जो अपने पास उपलब्ध राशि से राजस्व भूमि में वृक्षारोपण करना चाहते है।

योजना का क्रियान्वयन

1. इस योजना में ईमारती, गैर ईमारती, फलदार, बांस, लघु वनोपज एवं औषधीय पौधों का रोपण किया जायेगा।
2. हरियाली प्रसार योजना, मनरेगा, मुख्यमंत्री बांस विकास योजना एवं अन्य प्रचलित वृक्षारोपण योजना को यथास्वरूप में अथवा और सशक्त करते हुये रोपण का कार्य किया जायेगा।
3. यदि वन विभाग के नर्सरियों में किसी भी मद का पौधें निशुक्ल बांटने हेतु उपलब्ध है तो कृषकों द्वारा उन पौधों का उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति निशुक्ल पौधें हेतु वन विभाग से सम्पर्क करेंगे तो उपलब्धता अनुसार जो पहले सम्पर्क करते है उनको प्राथमिकता देते हुए प्रदान किया जायेगा।
4. यदि वन विभाग के पास निशुक्ल प्रदाय हेतु किसी भी मद का पौधा उपलब्ध नही है तो

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

निर्धारित दर में कृषकों को मांग किये जा रहे पौधा उपलब्ध होने पर नर्सरियों से प्रदाय किया जायेगा।

5. निशुल्क प्रदाय किये जाने वाले वृक्षों की परिवहन की जिम्मेदारी कृषकों की होगी।
6. वृक्षारोपण कार्य में आवश्यकतानुसार वन विभाग का तकनीकी सहयोग प्राप्त किया जा सकेगा।
7. योजनांतर्गत लाभ प्राप्त करने हेतु वन अधिकार पत्र धारक, ग्राम पंचायत/वन प्रबंधन समिति के द्वारा रोपण के **06** माह के भीतर अथवा 30 नवम्बर के पहले संबंधित वन परिक्षेत्र कार्यालय में पंजीयन कराया जाना अनिवार्य होगा।
8. पंजीकृत वृक्षारोपणों का अवलोकन माह अप्रैल में प्रतिवर्ष संबंधित वनमंडलाधिकारी द्वारा गठित निरीक्षण दल के द्वारा किया जायेगा। निरीक्षण दल में परिक्षेत्र अधिकारी स्तर के अन्तविभागीय अधिकारी हो सकते है।
9. विगत वर्ष के वृक्षारोपण का माह अप्रैल में निरीक्षण करने पर यदि **80** प्रतिशत रोपित पौधे जीवित पाये जाते है तो इस वृक्षारोपण को सफल माना जाकर, प्रति एकड़ रूपये **10,000/-** (दस हजार) प्रोत्साहन राशि हेतु वन अधिकार पत्र धारक को पात्र माना जाकर प्रोत्साहन राशि भुगतान करने की अनुशंसा निरीक्षण दल के द्वारा वनमंडलाधिकारी को प्रेषित की जाएगी।
10. इसी तरह विगत वर्ष के वृक्षारोपण का माह अप्रैल में निरीक्षण करने पर यदि **80** प्रतिशत रोपित पौधे जीवित पाये जाते है तो इस वृक्षारोपण को सफल माना जाकर, प्रति एकड़ रूपये **10,000/-** (दस हजार) प्रोत्साहन राशि हेतु उक्त ग्राम पंचायतों/वन प्रबंधन समितियों को पात्र माना जाकर प्रोत्साहन राशि भुगतान करने की अनुशंसा निरीक्षण दल के द्वारा वनमंडलाधिकारी को प्रेषित की जाएगी।
11. सफल वृक्षारोपण की प्रोत्साहन राशि का भुगतान, विहित अधिकारी के द्वारा DFO के माध्यम से संबंधित वन अधिकार पत्र धारक/ग्राम पंचायतों/वन प्रबंधन समितियों के खाते में किया जायेगा।
12. प्रोत्साहन राशि का भुगतान शासन द्वारा निर्धारित बजट मद से किया जायेगा।
13. ग्राम पंचायतों/संयुक्त वन प्रबंधन समिति के द्वारा स्वयं के संसाधन से किये गए वाणिज्यिक रोपण के विदोहन एवं विक्रय की प्रक्रिया स्वयं निर्धारित की जायेगी।
14. वन अधिकार पत्र धारक, ग्राम पंचायत तथा वन प्रबंधन समितियों के द्वारा किये गये वृक्षारोपण के साथ इन्टरक्रापिंग में धान को छोड़कर अन्य किसी भी फसल ली जा सकेगी।
15. रोपण हेतु सागौन, खम्हार, बिमा बांस, चंदन, सतावर, कालमेघ, बायबिडंग, गिलोय इत्यादि विभिन्न प्रकार के वृक्ष एवं औषधीय पौधें के रोपण एवं दोहन की प्रक्रिया का विस्तृत जानकारी पृथक से भेजी जा रही है।
16. कृषक, वन अधिकार पत्र धारक, ग्राम पंचायत तथा वन प्रबंधन समितियों को इस योजना लाभ लेने हेतु एक एकड़ में कम से कम **160** पौधों को लगाना अनिवार्य होगा।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

पंजीकरण

1. योजनांतर्गत लाभ प्राप्त करने हेतु कृषकों को निर्धारित समयावधि में संबंधित पोर्टल में पंजीयन कराना अनिवार्य होगा। अपंजीकृत कृषकों को योजनांतर्गत प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने की पात्रता नहीं होगी।

2. इसी तरह वन अधिकार पत्र धारक, ग्राम पंचायत एवं वन प्रबंधन समितियों को भी संबंधित वन परिक्षेत्र कार्यालय द्वारा पंजीकरण करना अनिवार्य होगा। पंजीकरण नही होने की दशा में इनको भी योजनांतर्गत प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने की पात्रता नहीं होगी।

3. ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी एवं विहित अधिकारी द्वारा पंजीकृत रकबे का गिरदावरी कर सत्यापन किया जायेगा। निरीक्षण में यह अनिवार्य रुप से देखा जाएगा कि वृक्षारोपण हेतु संपूर्ण पंजीकृत रकबे में वृक्षारोपण किया गया है तथा पंजीकृत रकबे में आंशिक रुप से भी धान का रोपण नहीं किया गया है। ऐसी स्थिति में वास्तविक रकबे में वृक्षारोपण अनुसार प्रोत्साहन राशि का भुगतान किया जाएगा।

4. वृक्षारोपण की उपयुक्त प्रजाति चयन के संबंध में उचित परामर्श कृषकों को आवश्यकतानुसार दिये जाएंगे।

छत्तीसगढ़ की दो पंचायतों को मिला राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कार

देश भर की ढाई लाख से अधिक ग्राम पंचायतों ने इस पुरस्कार के लिए नामांकन भरा था। इसमें छत्तीसगढ़ की 11658 ग्राम पंचायतें शामिल थीं। इनमें से 43 ग्राम पंचायतों को पुरस्कार के लिए देश भर से चुना गया। इस पुरस्कार के लिए 9 श्रेणियों में थीम रखी गई थी।

- सरगुजा जिले के ग्राम पंचायत नागम और धमतरी जिले के ग्राम सांकरा को किया गया सम्मानित
- नागम को गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका संवर्धन तथा सांकरा को स्वस्थ पंचायत थीम के लिए पुरस्कार

प्रतीक एग्रीटेक

ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता

अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

छत्तीसगढ़ के तीन शहीद जवानों को सर्वोच्च बलिदान के लिए मिला कीर्ति चक्र

- राष्ट्रपति के हाथों शहीद जवानों के परिजनों ने ग्रहण किया कीर्ति चक्र
- जवानों को कीर्ति चक्र मिलना परिवारजनों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का क्षण :मुख्यमंत्री श्री बघेल

रायपुर, 09 मई 2023 : राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने आज छत्तीसगढ़ के तीन शहीद जवानों को नक्सल ऑपरेशन में सर्वोच्च साहस और बलिदान के लिए कीर्ति चक्र से सम्मानित किया है। मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल ने नक्सली हमले में वीरगति को प्राप्त तीनों शहीद जवानों को नमन किया और उनके परिजनों के प्रति

सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जवानों के सर्वोच्च साहस और बलिदान के लिए कीर्ति चक्र मिलना परिवारजनों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का क्षण है।

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में आयोजित गरिमामय समारोह में छत्तीसगढ़ में नक्सल ऑपरेशन में शहीद उपनिरीक्षक श्री दीपक भारद्वाज, शहीद प्रधान आरक्षक श्री सोढ़ी नारायण तथा शहीद एसटीएफ प्रधान आरक्षक श्री श्रवण कश्यप के परिजनों को कीर्ति चक्र प्रदान किया। समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मु ने शहीद श्री दीपक भारद्वाज की पत्नी श्रीमती प्रंतिका भारद्वाज, शहीद आरक्षक श्री सोढ़ी नारायण की पत्नी श्रीमती सुशीला सोढ़ी और एसटीएफ प्रधान आरक्षक शहीद श्री श्रवण कश्यप की पत्नी श्रीमती दुतिका कश्यप को कीर्ति चक्र प्रदान किया। इन तीनों जवानों को राष्ट्रपति द्वारा बस्तर अंचल के बीजापुर जिले में हुए नक्सल ऑपरेशन में सर्वोच्च साहस और बलिदान के लिए कीर्ति चक्र प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

गौरतलब है कि उपनिरीक्षक शहीद श्री दीपक भारद्वाज छत्तीसगढ़ के जांजगीर चांपा जिले के मालखरौदा के पिहरीद, आरक्षक शहीद श्री सोढ़ी नारायण बीजापुर जिले पुनुर और एसटीएफ प्रधान आरक्षक शहीद श्री श्रवण कश्यप बस्तर जिले के बनिया गांव के रहने वाले थे।

प्रतीक एग्रीटेक
ड्रिप-स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम, बीज/उर्वरक एवं कृषि उपकरणों के विक्रेता
अहिवारा रोड, मुर्रा, कुम्हारी, जिला-दुर्ग, प्रो. जोहन लाल साहू, मोबाइलः 9827999717, 7389840407

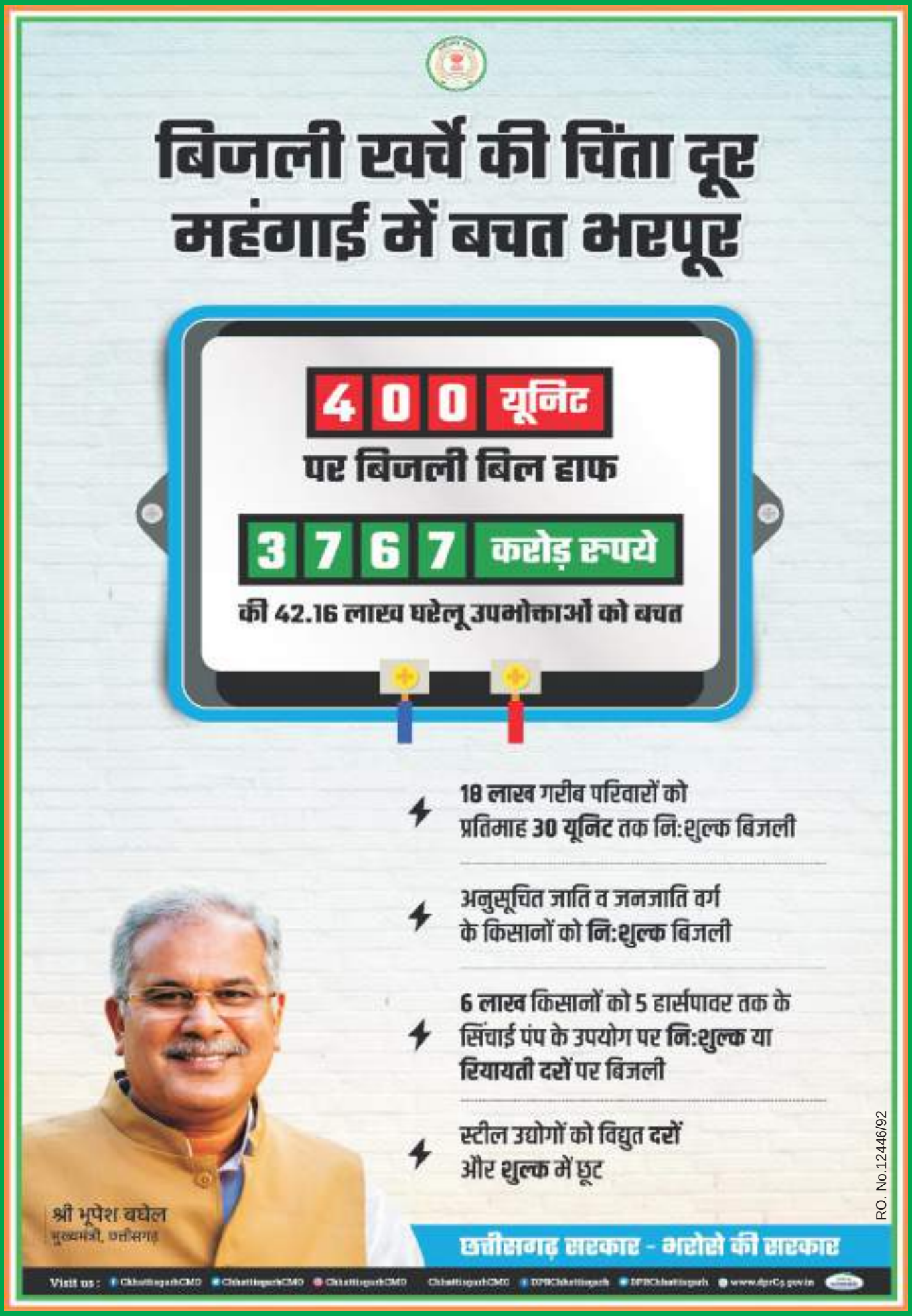
बिजली खर्चे की चिंता दूर
महंगाई में बचत भरपूर
400 यूनिट
पर बिजली बिल हाफ
3767 करोड़ रुपये
की 42.16 लाख घरेलू उपभोक्ताओं को बचत
18 लाख गरीब परिवारों को प्रतिमाह 30 यूनिट तक नि:शुल्क बिजली
अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग के किसानों को नि:शुल्क बिजली
6 लाख किसानों को 5 हार्सपावर तक के सिंचाई पंप के उपयोग पर नि:शुल्क या रियायती दरों पर बिजली
स्टील उद्योगों को विद्युत दरों और शुल्क में छूट
श्री भूपेश बघेल
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़
छत्तीसगढ़ सरकार - भरोसे की सरकार
Visit us :
www.dprCg.gov.in
RO. No.12446/92

Coromandel
FUTURE POSITIVE
हरित क्रांति का साथी
मेरा ग्रोमोर 28:28:0
murugappa
धान स्पेशल
फसलों को त्वरित और लंबे समय तक हरापन दे
GROMOR
UREA AMMONIUM PHOSPHATE
28-28-0
विशेषताएं
• नाइट्रोजन एवं फॉस्फेट के साथ एक उपयुक्त मिश्रण, 1:1 के अनुपात में
• फसल को अच्छी शुरुआत देता है।
• बेहतर पैदावार व गुणवत्ता।
• फसल का एक समान और शीघ्र पकाव।
• ये घुलनशील होने के कारण पौधे को आसानी से सुलभ होता है।
• नाइट्रोजन की आपूर्ति मिलने के कारण लंबे समय तक हरापन देता है।
• सभी फसलों के लिए बेसल प्रयोग के रूप में आदर्श है।
• धान, कपास, मिर्च, गन्ने, सब्जियों आदि के लिए सबसे उपयुक्त है।
भारत का No.1
फास्फेटिक खाद उत्पादक निजी संस्थान
कोरोमंडल इंटरनेशनल लिमिटेड
GROMOR
मेरा ग्रोमोर - हमेशा मेरे साथ